Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

(सूरः आराफ़ : 154)

अनुवाद : और वे लोग जिन्होंने बुराईयाँ कीं फिर इसके बाद तौबा कर ली और ईमान लाए, नि:संदेह तेरा रब इसके बाद भी बहुत बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 36

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12 सफ़र 1444 हिज्री कमरी, 08 तबूक 1401 हिज्री शम्सी, 08 सितम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शराब का व्यापार भी हराम क़रार दिया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी उम्मीदवार को रद्द नहीं करते

(2093) हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा : एक औरत बुरदा लेकर आई, कहा : आप जानते हैं कि यह बुरदा क्या है? तो उनसे कहा गया : हाँ। वह हाशियादार चादर होती है। उस औरत ने कहा : हे रसूलुल्लाह! मैं ने यह अपने हाथ से बुनी है कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पनाऊ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह ले ली। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसकी ज़रूरत थी। फिर आप हमारे पास बाहर आए और वही (चादर) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तह-बंद थी। लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल! यह (चादर) मुझे पहनने के लिए दीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थोड़ी देर मज्लिस में बैठे रहे। फिर अन्दर जा कर उसे ते किया और उस व्यक्ति के पास भेज दी। लोगों ने उस से कहा : तू ने अच्छा नहीं किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह मांग ली। तुझे इलम ही है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मांगने वाले को रद्द नहीं करते तो उस व्यक्ति ने कहा : ख़ुदा की कसम मैं ने यह इसी लिए मांगी कि वह मेरे लिए कफ़न हो, जब मैं मर जाऊ। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : तो वही (चादर) उसका कफ़न हुई।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब बियू, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल् नहल आयत 100 اِنَّهٗ لَيۡسَ لَهٗ سُلۡطٰنٌ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ (अनुवाद : (सच्ची) बात निसंदेह यही है कि जो लोग ईमान लाए हैं और अपने रब (की पनाह) पर भरोसा रखते हैं। उन पर उसका कोई तसल्लुत नहीं है) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

कुछ लोगों का ख़्याल है कि दुनिया में पड़ कर इन्सान ख़ुदा तआला से मुहब्बत कर ही नहीं सकता। इसलिए हज़रत मसीह की तरफ़ इंजील में यह कथन मंसूब किया गया है

क़ुरआन शरीफ़ को उम्दा तौर पर और मधुर स्वर से पढ़ना यह भी एक अच्छी बात है परन्तु क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की असल ग़रज़ तो यह है कि इसके हक़ायक़ और मआरिफ़ पर इत्तिला मिले और इन्सान एक बदलाव अपने अंदर करे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

क़ुरआन शरीफ़ की असल ग़रज़ और ग़ायत दुनिया को तक़्वा की तालीम देना है जिसके द्वारा वह हिदायत के उद्देश को हासिल कर सके। अब इस आयत में तक़्वा के तीन मरातिब को वर्णन किया है। اَلَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ

(अल् बक़रः : 4) लोग क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं परन्तु तोते की तरह से यूंही बग़ैर सोचे समझे चले जाते हैं। जैसे एक पण्डित अपनी पोथी को अंधा धुंद पढ़ता जाता है। न ख़ुद कुछ समझता है और न सुनने वालों को पता लगता है। इसी तरह पर क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत का तरीक़ केवल यह रह गया है कि दो-चार सिपारे पढ़ लिए और कुछ मालूम नहीं कि क्या पढ़ा। ज़्यादा से ज़्यादा यह कि सुर लगा कर पढ़ लिया और काफ़ और आइन को पूरे तौर पर अदा कर दिया। क़ुरआन शरीफ़ को उम्दा तौर पर और मधुर स्वर से पढ़ना यह भी एक अच्छी बात है परन्तु क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की असल ग़रज़ तो यह है कि उसके हक़ायक़ और मआरिफ़ पर इत्तिला मिले और इन्सान एक तबदीली अपने अंदर करे। (मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 387 प्रकाशन क़ादियान : 2018)

★ ★ ★

कुछ लोगों का ख़्याल है कि दुनिया में पड़ कर इन्सान ख़ुदा तआला से मुहब्बत कर ही नहीं सकता इस्लाम ने दुनिया को छोड़ने की तालीम नहीं दी बल्कि दुनिया के कामों में हिस्सा लेते हुए इसकी इस्लाह का हुक्म दिया है

अगर नेकों को दुनिया से अलैहदा रखा जाए तो ज़ाहिर है कि दुनिया की इस्लाह कभी हो ही नहीं सकती

(1) "ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना इस से आसान है कि दौलतमंद ख़ुदा की बादशाहत में दाख़िल हो।" (मति बाब : 19 आयत 24)

तथा (2) "दौलतमंदों का ख़ुदा की बादशाहत में दाख़िल होना कैसा मुश्किल है क्योंकि ऊंट का सूई के नाके से निकल जाना इस से आसान है कि दौलतमंद ख़ुदा की बादशाहत में दाख़िल हो।" (लूका बाब : 18 आयत 24-25)

इस ख़्याल के लोगों की तरफ़ से यह एतराज़ हो सकता था कि दुनिया के सम्बन्धित ख़बरें पढ़ने से कुछ लोगों के ईमान में कमज़ोरी पैदा होने की संभावना हो सकती थी तो मुस्लमानों को संसारिक फ़ुतूहात और हुकूमत की ख़बर दी ही क्यों गई? इस का उत्तर यह दिया कि शैतान का क़बज़ा कमज़ोरों पर होता है। मोमिन दुनिया में पड़ कर भी दीन की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं होता। अतः उस जगह हम सिर्फ कमज़ोरों को होशयार करते हैं यह हम तस्लीम नहीं करते कि मज़बूत ईमान वाले भी दुनिया में पड़ कर निजात से महरूम हो जाते हैं। मानो इस्लाम की तालीम इस बारे में यह है कि दस्त दरकार दिल बायार और यही मुक़ाम उच्च श्रेणी का मुक़ाम है। इसी वजह से इस्लाम ने दुनिया को छोड़ने की तालीम नहीं दी बल्कि दुनिया के कामों में हिस्सा लेते हुए इसकी इस्लाह का हुक्म दिया है। अगर नेकों को दुनिया से अलैहदा रखा जाए तो ज़ाहिर है कि दुनिया की इस्लाह कभी हो ही नहीं सकती। अगर ऐसे लोगों के हाथों में दुनिया की लगाम आए जो बावजूद दुनिया पर तसर्रुफ़ हासिल कर लेने के इन्साफ़ और अदल और तक़्वा क़ायम रखें तभी दुनिया की इस्लाह हो सकती है और दूसरों के लिए नेक मिसाल क़ायम हो सकती है। देखो रसूले सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा के हाथ जब दुनिया का बंद-ओ-बस्त आया तो उन्होंने किस तरह इस में पड़ कर इस से अलैहदा रहने का उदाहरण दिखाया और ऐसी शानदार मिसाल क़ायम की जो अब भी कि इस पर तेराह सौ साल गुज़र चुके हैं। बुद्धिमानों के दिलों में गुदगुदियाँ पैदा कर देती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 236 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

शेष पृष्ठ 11पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-5)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि मुझ से कुछ लोग पूछते हैं कि हम सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जलसा क्यों नहीं मनाते जैसे हम यौम-ए-मसीह मौऊद, यौम ख़िलाफ़त और यौम मुस्लेह मौऊद मनाते हैं?

उत्तर : इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कौन कहते हैं कि हम नहीं मनाते। हम मीलादुन्नबी का जलसा उस दिन नहीं करते जो ग़ैर अहमदियों ने शुरू किया हुआ है। सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जलसा तो शुरू ही अहमदियों ने किया था। इस से पहले होता ही नहीं था। जब हिन्दुओं ने और ईसाईयों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर आरोप शुरू किए । उस समय सबसे पहले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आगे बढ़ते हुए उनके उत्तर दिए और हज़रत मुस्लेह मौऊद के ज़माना में जलसे शुरू हुए और क़ादियान में कई दफ़ा इस तरह भी होता था कि इन जलसों के इन कुछ दिनों में वहां जलूस भी निकला करते थे। जलूस से मुराद यह है कि सल्ले अला (दरूद शरीफ़) पढ़ते हुए लोग गलियों में से गुज़रा करते थे। इस लिए ये जलसे हम करते हैं और हम ने ही ये शुरू किए हैं। ये दूसरे लोग तो केवल मीलादुन्नबी एक दिन वर्ष में कर लेते हैं और कुछ बातें करके बैठ जाते हैं, अनुकरण करते नहीं। हम तो सारा वर्ष सीरतुन्नबी के जलसे मनाते हैं। जर्मनी में प्रत्येक जगह मना रहे होते हैं

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम सबसे ज़्यादा बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर एतराज़ों के उत्तर देते हैं। कौन से मुस्लमान सदर ने या किसी बादशाह ने या उनके उल्मा ने जब कार्टूनों का जो डेनमार्क में क़िस्सा हुआ है तो उत्तर दिया था। मैंने ही दिया था और सबसे पहले आगे बढ़कर उत्तर दिया था। और निरन्तर कई ख़ुत्बों में दिया था। इसके बाद जो कई दफ़ा एतराज़ उठते हैं तो उनका उत्तर देता हूँ। मेरे से पहले खलीफ़ा भी इस तरह उत्तर देते रहे। अब जो मेरे जितने ख़ुत्बे थे। नाईजेरिया के अख़बारों ने उनकी ट्रांसलेशन करके वहां प्रकाशित किया और उन्होंने कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत पर और इस तरह इस आरोप के उत्तर पर इतना अच्छा उत्तर हमें आया कि हम सबको यह सीखना चाहिए। तो लोग तो हमारे से सीखते हैं। तुम कहती हो हम मनाते नहीं। हम तो बहुत मनाते हैं। हम वर्ष में एक दफ़ा नहीं मनाते। हम कहते हैं हर वक़त मनाओ। गिन गिन कर यार का वर्णन न करो बल्कि करते चले जाओ।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि एक पक्की आयु होती है जब रोज़े रखने पड़ते हैं। कौन सी आयु से रोज़े रखने चाहिऐं?

उत्तर : इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जब तुम अभी स्टूडैंट हो और तुम्हारी ग्रोथ की आयु है तो रोज़े न रखो परन्तु एक-आध रोज़ा रखने की आदत डालनी चाहिए और जब सतरह अठारह वर्ष की हो जाओ। तो फिर रोज़े रखने चाहिऐं परन्तु इस समय भी यदि परीक्षा है और बड़े स्मसयाएँ हैं और परेशानी है लंबे रोज़े नहीं रख सकते तो वह रोज़े बाद में पूरे कर लो। परन्तु रोज़े रखने में बहाना नहीं करना चाहिए। अठारह वर्ष की आयु जो है यह मैचोर आयु होती है इस में रोज़े रख लेने चाहिऐं। इस से पहले पहले रोज़े रखने की आदत डालनी चाहिए।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि लड़कियों के लिए क्यों कोई जामिया नहीं है?

उत्तर : इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जब हमारे इतने वसायल होजाएंगे तो लड़कियों के लिए भी खोल लेंगे पहले लड़कों का तो पूरा करने दो। लड़कियों के लिए रब्वाह में उदाहरण के लिए आईशा अकैडमी है जहां लड़कियां दीनयात की शिक्षा भी लेती हैं हिफ़्ज़ क़ुरआन भी करती हैं। कैनेडा वालों ने आईशा अकैडमी खोल ली है। वहां भी दीनयात की शिक्षा दी जाती है उनका पहला बीज पास हुआ है। तो दीनयात का कोर्स उन्होंने दो वर्ष का किया है। क़ुरआन-ए-करीम की हिफ़्ज़ की क्लास लगती है हिफ़्ज़ भी करवाए जाते हैं। तो जर्मनी वाले भी जब उनके वसायल होंगे खोल लेंगे।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने अर्ज़ किया इस वर्ष हम इंडिया से हो के आए हैं और मैंने पूछना था हम बैयतुद्दुआ गए थे तो वहां फ़ोटोज़ बनाने की क्यों आज्ञा नहीं है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : लोग कई दफ़ा बना लेते हैं। फिर कुछ लोग बिदआत में पड़ जाते हैं। इन बिद्दतों को ख़त्म करना है वैसे तो बैयतुद्दुआ की तस्वीरें हमारे कैलेंडरों में या लिटरेचर में छपी हुई हैं लोग दुआ करते हुए खड़े हैं। कोई ऐसी बात नहीं है हराम नहीं है?

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि जमाअत अहमदिया का सही अर्थ क्या है?

उत्तर : इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : तुम लड़के लड़कियां एक जैसे प्रश्न क्यों कर रही हो बहरहाल जब प्रत्येक दस वर्ष के बाद हुकूमत अपने देश के लोगों की जो जनसंख्या है वह काऊंट करती है। फिर देखते हैं पुरुष कितने हैं और महिलाए कितनी हैं बच्चे कितने हैं। पढ़े लिखे कितने हैं। विभिन्न धर्म के लोग कितने हैं। यह जो सारा डैटा इकट्ठा किया जाता है। इस को मर्दुम-शुमारी कहते हैं। इसलिए 1901 मैं जब इंडिया की मर्दुम-शुमारी हो रही थी उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि अहमदी जो हैं वह अपने आपको मर्दुम-शुमारी में अहमदी मुस्लमान करके लिखें ताकि ग़ैर अहमदी मुस्लमानों से हमारा अंतर हो जाएगी। क्योंकि नाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का भी है। मुहम्मद भी है और अहमद भी है। और अहमद का जो जलवा है। वह मसीह मौऊद के ज़माने में ज़्यादा दिखाया जाना है अर्थात जो नरमी और प्यार और मुहब्बत से इस्लाम का संदेश पहुंचाया जाना है। यही मसीह मौऊद का काम था। इस लिए हम अहमदी लिखते हैं ताकि हम इस्लाम की तब्लीग़ प्यार और मुहब्बत से करते जाएं और दूसरे मुस्लमानों से हम में अंतर नज़र आए। क्योंकि हदीसों में भी आया है बुख़ारी में भी है कि जब मसीह मौऊद आएगा तो जंगों में देरी करेगा और अंत करेगा।

प्रश्न : एक परिचित ने प्रश्न किया कि तुर्कियों की ईद क्यों हमसे एक दिन पहले होती है?

उत्तर : इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उन तुर्कियों से पूछो। क्यों करते हैं। हम तो चांद देख के करते हैं। तुर्कियों की ईद इस लिए पहले होती है वह बिना चांद देखे करते हैं और हम चांद देख के करते हैं। चूँकि यहां चांद तो किसी को नज़र आता नहीं और के केल्कुलेशन के हिसाब से जिस दिन हम ईद करते हैं उस दिन से पहले चांद नज़र आ ही नहीं सकता। इस लिए हम बड़ा सोच समझ के देखते हैं कि इस दिन चांद नज़र आ सकता है या तो चांद नज़र आ जाए तब हम ईद करते हैं या यदि चांद नज़र न आए तो इस दिन ईद करते हैं जब केल्कुलेशन के हिसाब से चांद नज़र आ सकता है।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि मेरे पास एक तुर्की मित्र है तो उसने कहा था कि वह जब नमाज़ पढ़ती है तो वुज़ू करने से पहले नेल पालिश का प्रयोग नहीं करती। नेल पालिश उतार देती है।

उत्तर : इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : फिर इस का अर्थ है वह वर्ष में एक दफ़ा नमाज़ पढ़ते हैं। प्रत्येक दफ़ा हो नहीं सकता कि पाँच दफ़ा नेल पालिश लगाऐं और पाँच दफ़ा उतारे। वुज़ू इस लिए करते हैं कि हाथ धुल जाएं और साफ़ हो जाएं। मुँह धुल जाएं साफ़ हो जाएं नाक साफ़ हो जाए गला साफ़ हो जाए मुँह साफ़ हो जाए, बाज़ू पांव साफ़ हों प्रत्येक जगह सफ़ाई के लिए वुज़ू करते हैं तो नेल पालिश जब तुम लगाते हो तो नेल पालिश तो सील कर देती है। नाख़ुन और नेल पालिश के मध्य उसके अंदर कोई हवा तो नहीं जाती। जब हवा नहीं जाती तो इस का अर्थ है नेल पालिश के ऊपर से जो गंद था वह साफ़ हो गया है तो नमाज़ जायज़ है कोई आवश्यकता नहीं उतारने की।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि हुज़ूर जब वह दिन आएगा जब जर्मनी के

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

किसी फ़ौज का कोई बड़े से बड़ा बासलाहियत सिपहसालार ऐसे आत्मविश्वास और निश्चिंतता और वफ़ादारी और ख़ुलूस का प्रदर्शन नहीं कर सकता जब तक कि उसे देश के प्रधान की ज़ाती विशेषताओं और आला किरदार ने प्रभावित न किया हो

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के बाबरकत दौर में इस्लाम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

जलसा सालाना बर्तानिया के शामिल होने वाले कार्कुनान के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 जुलाई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने की मुहिम्मात का वर्णन हो रहा था। जंगों का बक़ाया वर्णन आज करूँगा जो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में लड़ी गई थीं। यह मज़मून जो जंगों का है यह आज ख़त्म करने के लिए हो सकता है कि शायद ख़ुतबा थोड़ा सा लंबा भी हो जाए।

जंग हीरा, रबीउल अव्वल बारह हिज्री के अवायल में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अमग़ीशया से हीरा की तरफ़ कूच की।

(उद्धरित सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ उमर अबू नसर, पृष्ठ 672 अनुवादक उर्दू मुश्ताक़ बुक कॉर्नर उर्दू बाज़ार लाहौर 2020 ई.)

इसके बारे में यह है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अमग़ीशया से दरिया-ए-फ़ुरात के क़रीब, हीरा की तरफ़ कूच की। हीरा ईसाई अरबों का क़दीम मर्कज़ था और उस वक़्त हीरा का हाकिम एक ईरानी था। हीरा के हाकिम को अनुमान था कि अब ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ौजों का रुख उसकी तरफ़ होगा इसलिए उसने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो से जंग की तैयारियां शुरू कर दीं और उसने यह अंदाज़ा भी कर लिया कि ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो इधर आने के लिए दरियाई रास्ता इख़्तेयार करेंगे और कश्तियों पर सवार हो कर पहुँचेंगे। उसने अपने बेटे को दरिया-ए-फ़ुरात का पानी रोकने का हुक्म दिया ताकि ख़ालिद की कश्तियां दलदल में फंस जाएं और ख़ुद उसके पीछे चला और हीरा के बाहर अपने लश्कर को ठहराया। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो अमग़ीशया से रवाना हुए और सामान और माल-ए-ग़नीमत के साथ फ़ौज भी कश्तियों में सवार करा दी गई तो पानी की कमी की वजह से कश्तियां ज़मीन के साथ लगने की वजह से हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को बड़ी परेशानी हुई। मल्लाहों ने कहा कि फ़ारस वालों ने फुरात का पानी इस तरफ़ आने से रोक कर नहरों को खोल दिया है। समस्त पानी दूसरे रास्तों की तरफ़ बह रहा है। जब तक नहरें बंद नहीं होंगी हमारे पास पानी नहीं आ सकता। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ोरन सवारों का एक दस्ता लेकर हाकिम के बेटे की तरफ़ बढ़े। रास्ते में दरयाए अतीक़ के किनारे पर लश्कर के एक हिस्सा से हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की मुढ भेड़ हुई। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन पर अचानक हमला कर दिया जबकि वह बिल्कुल ग़ाफ़िल थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन सबका ख़ातमा कर दिया। फिर आगे बढ़े और देखा कि हाकिम ही का बेटा दरिया का रुख फेरने के काम की निगरानी कर रहा है। उन्होंने अचानक इस पर हमला करके उसको और उसकी फ़ौज को क़तल कर दिया और बंद तोड़ कर दरिया में दुबारा पानी जारी करवा दिया और फिर ख़ुद वहां खड़े हो कर इस काम की निगरानी करते रहे यहां तक कि कश्तियों ने दुबारा सफ़र शुरू कर दिया।

इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने समस्त सरदारों को जमा किया और ख़वर्नक़ के मुक़ाम पर पहुंच गए। ख़वर्नक़ ही के क़रीब एक क़िला था परन्तु जब हाकिम को मालूम हो गया कि अर्दशीर मर गया है और स्वयं उसका बेटा भी जंग में मारा जा चुका है तो वे बग़ैर लड़े दरिया-ए-फ़ुरात पार करके भाग गया लेकिन हाकिम के भाग जाने के बावजू हीरा वालों ने हिम्मत नहीं हारी और वह क़िला बंद हो गए। यहां चार क़िले थे और चारों क़िलों में महसूर हो कर लड़ाई की तैयारी करने लगे।

अम्मा बअदु लिखा है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़िलों का मुहासरा निमंलिखित तरीक़ा से किया। ज़रार बिन अज़ोर क़सर अबैदी के मुहासिरा के लिए निर्धारति हुए। इस में ईयास बिन क़ुबसिया ताई पनाह लिए थे। ज़रार बिन ख़िताब क़सर अदसिय्यीन के मुहासरे के लिए निर्धारित हुए। इस में अदी बिन अदी पनाह गज़ीन था। ज़रार बिन मकरन क़सर बनी माज़िन के मुहासरे के लिए निर्धारित हुए इस में अदि बिन अदि पनाह गज़ीन थे। मुसन्ना बिन हरिसा क़सर बिन बुकैला के मुहासरे के लिए निर्धारित हुए इस में अम्र बिन अब्दुल मसीह पनाह गज़ीन थे।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने उमरा के नाम यह फ़रमान जारी किया कि वे पहले उन लोगों को इस्लाम की दावत दें। अगर वे इस्लाम क़बूल कर लें तो उनके इस्लाम को मान लें और अगर वे इनकर करें तो उन्हें एक दिन की मोहलत दें और उन्हें हुक्म दिया कि दुश्मन को अवसर न दें बल्कि उनसे क़िताल करें और मुस्लमानों को दुश्मन से क़िताल करने से न रोकें।

दुश्मन ने मुक़ाबला आराई को इख़्तेयार किया और मुस्लमानों पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। मुस्लमानों ने उन पर तीरों की बारिश की और उन पर टूट पड़े और महलों और क़िलों को फ़तह कर लिया। वहां जो पादरी मौजूद थे उन पादरियों ने आवाज़ लगाई कि हे महल वालो हमें तुम्हारे सिवा कोई क़तल नहीं करने पाए। उनको जोश दिलाने की कोशिश की। महल वालों ने आवाज़ दी। हे अरबो हमने तुम्हारी तीन शर्तों में से एक को क़बूल कर लिया है लिहाज़ा तुम रुक जाओ। जब उन्होंने वहां देखा कि अरब मुस्लमान ग़ालिब आ रहे हैं तो उन्होंने शर्तों पर क़िले खोलने का ख़्याल ज़ाहिर किया। इन महलात के सरदार बाहर निकले। फिर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन महल वालों से अलग अलग मुलाक़ात की और उनके इस काम पर निंदा की।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी उर्दू, पृष्ठ 410 फुर्क़ान ट्रस्ट मुज़फ़्फ़र गढ़) हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 315 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर) (तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 315 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(मोअज्जम अल्बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 459)

और निंदा करते हुए फ़रमाया कि तुम पर अफ़सोस तुमने अपने आपको क्या समझ कर हमसे मुक़ाबला किया अगर तुम अरब हो तो किस वजह से तुम अपने ही हमक़ौम लोगों का मुक़ाबला करने पर तैयार हो गए और अगर तुम अजमी हो तो क्या तुम्हारा ख़्याल है कि तुम एक ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में जीत जाओगे जो अदल-ओ-इन्साफ़ में नज़ीर रखती! सरदारों ने टैक्स देने का इक़रार कर लिया। ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को उम्मीद थी कि एक क़ौम होने की वजह से यह इराक़ी अरब ज़रूर इस्लाम क़बूल कर लेंगे लेकिन उन्हें बेहद आश्चर्य हुआ जब उन्होंने बदस्तूर ईसाई रहने पर इसरार किया। बहरहाल हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हीरा वालों और मुस्लमानों के मध्य होने वाला अनुबंध लिखा जो यह था।

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। यह वह अनुबंध है जो ख़ालिद बिन वलीद ने अदी बिन अदी, अम्र बिन अदी, अम्र बिन अब्दुल मसीह, ईयास बिन कबीसा और हैरी बिन अकाल से क्या है। ये अहले हीरा के सरदार हैं और हीरा वाले इस अनुबंध पर राज़ी हैं और उन्होंने इसका उन्हें हुक्म दिया उनसे एक लाख नव्वे हज़ार दिरहम पर अनुबंध किया है जो हर साल उनसे उनकी हिफ़ाज़त के बदले वसूल किया जाएगा।

अर्थात मुक़ामी लोगों की हिफ़ाज़त के लिए यह टेक्स लगाया कि जो दुनियावी माल-ओ-मता उनके क़बज़ा में है ख़ाह वे राहिब हों या पादरी लेकिन जिनके पास

कुछ नहीं, दुनिया से अलग हैं, इस को छोड़ चुके हैं, यह अनुबंध उनकी हिफ़ाज़त की शर्त पर है। और अगर वे उनकी हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम न कर सकें तो उन पर कोई टेक्स नहीं यहां तक कि वे अर्थात हाकिम उनकी हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम करे। अगर उन्होंने अपने किसी कार्य या कथन के ज़रीया से ग़द्दारी की तो यह अनुबंध ख़त्म हो जाएगा। यह अनुबंध रबीउल अव्वल बारह हिज्री में लिखा गया।

यह तहरीर हीरा वालों के हवाले कर दी गई और जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद अहल सवाद मुर्तद हो गए तो उन लोगों ने इस अनुबंध की तौहीन की और इस अनुबंध पर अमल नहीं किया और दूसरे लोगों के साथ उन्होंने भी कुफ़्र का इर्तिकाब किया और लोगों पर फ़ारस वालों का तसल्लुत हो गया। जब हज़रत मुसन्ना ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर ख़िलाफ़त में हीरा को पुनः फ़तह किया तो उन लोगों ने इसी अनुबंध को पेश किया परन्तु हज़रत मुसन्ना ने इस को क़बूल नहीं किया और उन पर दूसरी शर्त आयद की। फिर जब हज़रत मुसन्ना कुछ मुक़ामात में मग़लूब हो गए। जंगों में उनको भी कुछ पीछे हटना पड़ा तो उन लोगों ने दुबारा लोगों के साथ मिलकर कुफ़्र इख़तेयार किया। बाग़ीयों की इआनत और अनुबंध की तौहीन की और इस अनुबंध पर अमल नहीं किया। फिर जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हीरा को फ़तह किया तो उन लोगों ने साबिक़ा अनुबंध पर तसफ़ीया चाहा तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इन दोनों में से कोई एक अनुबंध पेश करो परन्तु वे लोग पेश करने से क़ासिर रहे। इस पर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन पर ख़राज आयद किया और उनकी माली सहायता की तहक़ीक़ात करने के बाद इलावा मोतीयों के चार लाख का ख़राज आयद किया।

जब हीरा फ़तह हो गया तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने नमाज़ फ़तह पढ़ी जिसमें आठ रकात एक सलाम से अदा कीं। अर्थात इकट्ठी आठ रकात पढ़ें। इस से फ़ारिग़ हो कर आए तो कहा जंग मौता में जब मैंने लड़ाई की थी तो उस वक़्त मेरे हाथ से नौ तलवारें टूटी थीं। मैंने कभी किसी क़ौम से जंग नहीं की जैसी उस क़ौम से जंग की है जो फ़ारस वालों में से हैं और मैंने फ़ारस वालों में से किसी से जंग नहीं की जैसी उलैस वालों से की।

(तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 316 से 319 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर लिखा है कि इन लोगों ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में तहायफ़ भी भेजे थे लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़तह की ख़ुशख़बरी के साथ वह तहायफ़ भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भेज दिए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी अदल-ओ-इन्साफ़ के आला मयार का सबक़ देते हुए इन सब तहायफ़ को टेक्स में शुमार करके क़बूल कर लिया और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि यह तहायफ़ अगर टेक्स में शामिल हैं तो ख़ैर, अन्यथा तुम उनको टेक्स में शामिल करके बक़ीया रक़म वसूल करो। अर्थात तोहफ़ा के तौर पर ये चीज़ें वसूल नहीं कीं बल्कि टेक्स के तौर पर कीं। मुस्लमानों ने ही के मुक़ामी बाशिंदों के साथ बड़ी कुशादा दिल्ली का मुआमला किया। यह सुलूक देखकर आस पास के ज़मीन-दारों और रईसों ने भी टेक्स देना क़बूल करके मुस्लमानों की मातहती इख़तेयार कर ली।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 318-319 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

फ़तह हीरा अज़ीम जंगी एहमीयत की हामिल साबित हुई।

इस से मुस्लमानों की निगाह में फ़तह फ़ारस की उम्मीदें बढ़ गईं क्योंकि इराक़ और फ़ारसी सलतनत की लिए भौगोलिक और साहित्य की हैसियत से इस शहर की बड़ी एहमीयत थी। इसको इस्लामी फ़ौज के सिपहसालार आज़म ने अपना मर्कज़ और सदर मुक़ाम क़रार दिया जहां से इस्लामी अफ़्वाज को हुजूम-ओ-दिफ़ा और नज़म-ओ-इमदाद के अहकाम जारी किए जाते थे और क़ैदियों के उमूर के नज़म-ओ-ज़बत से सम्बन्ध में तदबीर-ओ-सियासत का मर्कज़ बनाया और वहां से हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़राज और टेक्स को वसूल करने के लिए मुख़्तलिफ़ सूबों पर आमिल निर्धारित किए और इस तरह सरहदों पर उमरा मुक़र्रर किए ताकि दुश्मन से हिफ़ाज़त हो सके और ख़ुद यहां ठहर कर निज़ाम अमन-ओ-इस्तिक़रार बहाल करने में लग गए। आपकी ख़बरें जागीरदारों और सरदारोँ को मिलीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु से मुसालहत के लिए आगे बढ़े। जब उन्होंने देखा कि ये लोग फ़तह पा रहे हैं तो उन्होंने मुसालहत कर ली। सवाद इराक़ और इस के अतराफ़ में कोई बाक़ी न रहा जिसने मुस्लमानों के साथ मुसालहत या अनुबंध न कर लिया हो।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्मद अनुवादक, पृष्ठ 412 मकतबा अल्फ़रकान मुज़फ़्फ़र गढ़)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो एक साल तक ही मुक़ीम रहे और शाम की तरफ़ रवानगी से क़बल उसके बालाई और ज़ीरीं इलाक़ों में दौरे करते रहे और फ़ारस वालों बादशाह बनाते रहे और माज़ूल करते रहे।

(तारीख़ अलतिबरी, भाग 2 पृष्ठ 321 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

अर्थात इसके मुक़ाबले में फ़ारस वालों ने क्या किया वहां सिर्फ बादशाह बनते रहे और माज़ूल होते रहे। जब इराक़ की फ़िज़ा साज़गार हो गई और हीरा और दजला के मध्य अरब इलाक़ों से फ़ारसी हुकूमत के ख़त्म हो जाने से पीछे से ख़तरा बाक़ी न रहा तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने बराह-ए-रास्त ईरान पर हमला-आवर होने का अज़म कर लिया और इस दौरान में उर्दशीर् किसरा के मर जाने से ईरानी हुकूमत अशांति का शिकार हुई। उनके मध्य उसके जांनशीन के इंतिख़ाब के सिलसिला में सख़्त इख़तेलाफ़ रौनुमा हुए। इस अवसर से फ़ायदा उठाते हुए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके बादशाहों और अमीरों और ख़ास लोगों को ख़त लिखे। इन बादशाहों को तहरीर करते हुए फ़रमाया ख़ालिद बिन वलीद की जानिब से बादशाहान फ़ारस के नाम। इसके बाद! अल्लाह ही के लिए समस्त हमद है जिसने तुम्हारे निज़ाम को तोड़ दिया। तुम्हारी चाल नाकाम कर दी। तुम्हारे अन्दर इख़तेलाफ़ बरपा कर दिया। तुम्हारी ताक़त कमज़ोर कर दी। तुम्हारे माल छीन लिए। तुम्हारे ग़लबा और इज़्ज़त को ख़ाक में मिला दिया। इसलिए जब तुम्हें मेरा यह ख़त मिले इस्लाम क़बूल करो, महफ़ूज़-ओ-मामून रहोगे या फिर अनुबंध कर के जुज़्य देने पर राज़ी हो जाओ। अगर इस्लाम क़बूल नहीं करना तो सुलह का अनुबंध कर लो और टेक्स देने पर राज़ी हो जाओ और अगर ऐसा करोगे तो हम तुम्हें और तुम्हारा इलाक़ा छोड़कर दूसरी तरफ़ चले जाऐंगे। अन्यथा

अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा कोई माबूद नहीं मैं ऐसी फ़ौज लेकर तुम्हारे पास आऊँगा जो मौत से ऐसी ही मुहब्बत करती है जिस तरह तुम ज़िंदगी से मुहब्बत रखते हो और आख़िरत में उतनी ही रग़बत रखते हैं जितनी रग़बत तुम्हें दुनिया से है। और ईरानी अमाल और उमरा को ख़त तहरीर करते हुए फ़रमाया। ख़ालिद बिन वलीद की तरफ़ से फ़ारस के उमरा के नाम। यह ख़त ख़ालिद बिन वलीद की तरफ़ से ईरानी अमालऔर उमरा के नाम है तुम लोग इस्लाम क़बूल कर लो सलामत रहोगे या टेक्स अदा करो हम तुम्हारी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार होंगे अन्यथा याद रखो कि मैंने ऐसी क़ौम के साथ तुम पर चढ़ाई की है जो मौत की उतनी ही फ़रेफ़्ता है जितना तुम शराब पीने के।

हीरा की फ़तह से इराक़ को फ़तह करने और उसको इस्लामी सलतनत के अधीन करने से सम्बन्धित हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की आरज़ूओं का एक हिस्सा पाया-ए-तकमील को पहुंच गया जो ईरान पर बराह-ए-रास्त हमला-आवर होने की तमहीद थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस सिलसिला में अपनी ज़िम्मेदारी अच्छे तरीक़े से अदा की और थोड़ी ही मुद्दत में हीरा तक पहुंच गए क्योंकि इराक़ के ख़िलाफ़ आप रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहिम का आग़ाज़ मुहर्रम बारह हिज्री में मार्का काज़मा से हुआ और इसी साल रबीउल अव्वल बारह हिज्री में ही हफ्ता हो गया।

फिर उसके बाद जंग अंबार या ज़ातिल उयून का वर्णन है जो बारह हिज्री में हुई। ईरानी फ़ौज हीरा के बिल्कुल क़रीब अंबार और ऐनुल तमर में ख़ेमा-ज़न हो चुकी थी। अंबार भी बग़दाद के क़रीब एक शहर है। अंबार की वजह तसमीया में लिखा है कि अरबी ज़बान में अंबार ग़ल्ला और सामान रखने की कोठड़ी को कहते हैं और इस शहर को अंबार इसलिए कहा जाता था कि वहां खाने पीने की चीज़ें बकसरत मौजूद थीं। ऐनुल तमर अंबार के क़रीब कूफ़ा के मग़रिब में स्थित एक शहर है।

लिखा है कि इस्लामी फ़ौज को इन मुक़ामात में ईरानी फ़ौज की मौजूदगी से सख़्त ख़तरा पैदा हो चुका था। इन हालात में अगर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु खामोशी से ही बैठे रहते और बाहर निकल कर ईरानी फ़ौजों के ख़िलाफ़ कार्रवाई न करते तो अंदेशा था कि मुस्लमान इस इलाक़े अर्थात हीरा मुस्लमानों ने फ़तह किया था इस से हाथ धो बैठेंगे जो इंतिहाई मेहनत के बाद उनके हाथ आया था। इसलिए

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौज को तैयार होने का हुक्म दिया। (उद्धरित सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्मद अनुवादक, पृष्ठ 413 मकतबा अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़) (हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो सिद्दीक़ अकबर, पृष्ठ 287 अज़हेकल, अनुवादक इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ 2004 ई.)(अल्कामिल फिल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 245 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत) (उद्धरित अल् मुन्जिद ज़ेर लफ़्ज़ नम्बर) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 305 भाग 4, पृष्ठ 199, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हीरा और इस के गर्द-ओ-नवाह में जब हालात क़ाबू में आ गए और अमन बहाल हो गया तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हीरा पर हज़रत काका बिन अम्र तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना नायब निर्धारित करके ख़ुद हज़रत अयाज़ बिन ग़नम की इमदाद के लिए रवाना हुए। हज़रत अयाज़ बिन ग़नम को हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर से इराक़ की फ़तह के लिए रवाना किया था और उन्हें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिलने का हुक्म दिया था। (सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्मद अल् स्लाबी अनुवादक, पृष्ठ 416)

अंबार के लश्कर का सिपहसालार साबात का रईस शेरज़ाद था। वे अपने ज़माने में बड़ा अक़लमंद, सम्मानित और अरब-ओ-अजम में हरदिलअज़ीज़ अजमी था। साबात भी मदायन में एक मशहूर जगह का नाम है। बहरहाल लिखा है कि अहल-ए-अंबार क़िला बंद हो गए और उन लोगों ने क़िला के इर्द-गिर्द ख़ंदक़ खोदी हुई थी जिसको पानी से भर दिया गया था और यह ख़ंदक़ क़िला की दीवार के बहुत क़रीब थी। कोई भी मुस्लमान अगर उसके क़रीब भी होता तो क़िला की दीवारों में मुतय्यन मुख़ालिफ़ सिपाही ज़बरदस्त तीर-अंदाज़ी से मुस्लमानों को पीछे हटने पर मजबूर कर देते। वे लोग इसी हालत में थे कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने लश्कर के अगले हिस्सा को लेकर वहां पहुंचे। उन्होंने ख़ंदक़ के अतराफ़ एक चक्कर लगाया, क़िला के दिफ़ाई इंतेज़ामात का जायज़ा लिया और अपनी ख़ुदादाद फ़िरासत से एक मन्सूबा बनाया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने तीर अंदाज़ों के पास गए और एक हज़ार तीर-अंदाज़ मुंतख़ब किए जो बहुत अच्छे निशाना बाज़ थे और उनको हिदायत की और कहा कि मैं देखता हूँ कि ये लोग उसूल-ए-जंग से बिल्कुल नआशना हैं। तुम लोग सिर्फ उनकी आँखों को अपने तीरों का निशाना बनाओ और इस के सिवा कहीं और न मॉरो। इसलिए उन लोगों ने एक साथ तीर चलाए और इसके बाद कई दफ़ा ऐसा ही किया जिसका नतीजा यह हुआ कि उस रोज़ तक़रीबन एक हज़ार आँखें फूट गईं। इसी लिए ये जंग ज़ातुल उयून के नाम से भी प्रसिद्ध है अर्थात आँखों वाली जंग।

दुश्मनों में शोर मच गया कि अहल-ए-अंबार की आँखें जाती रहीं लेकिन इस पर भी हाकिम अंबार ने ग़ैर मशरूत तौर पर हथियार डालने से आना कानी की तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी फ़ौज के कुछ कमज़ोर और निढाल ऊंट लेकर ख़ंदक़ के तंग तरीन मुक़ाम पर आए। फिर ऊंटों को ज़बह करके इस ख़ंदक़ में डाल दिया जिससे वे भर गई और उन जानवरों से एक पुल बन गया। अब मुस्लमान और मुशरेकीन ख़ंदक़ में एक दूसरे के सामने थे। यह देखकर दुश्मन पसपा हो कर क़िला बंद हो गया। इसलिए हाकिम अंबार शेरज़ाद ने फिर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु से सुलह के लिए मुरासलत की और दरख़ास्त की कि मुझ को सवारों के एक दस्ते के साथ जिनके साथ सामान इत्यादि कुछ न हो यहां से निकलने और अपने ठिकाने पर पहुंचने की इजाज़त दी जाए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस को मंज़ूर कर लिया।

यहां यह बात भी काबिल-ए-तवज्जा है कि जो इतिहासकार और सीरत निगार हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु पर यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो वहशत-ओ-बरबरीयत का बाज़ार गर्म रखते थे और क़तल-ओ-ग़ारतगरी किए जाते थे उन के लिए काबिल-ए-ग़ौर है कि सख़्त तरीन जंग करने और बार-बार सुलह की पेशकश को भी क़बूल न करने के बावजूद इस पर, दुश्मन पर ग़लबा पा लिया और उसने जब यहां से जाने की इजाज़त मांगी तो फिर तीन दिन का सामान-ए-रसद साथ लेकर जाने की इजाज़त भी दे दी और किसी किस्म का तार्रुज़ नहीं किया। अतः यह इस बात की दलील है कि आप पर यह इल्ज़ाम है कि आप ज़ुलम किया करते थे।

जब शेरज़ाद यहां से जान बचा कर बहमन जाज़विया के पास पहुंचा और उसको वाक़ियात से अवगत किया तो उसने शेरज़ाद को मलामत की और इस पर शेरज़ाद ने कहा कि मैं वहां ऐसे लोगों में था जो अक़ल से आरी थे और जो अरबों की नसल से थे। इस का मुस्लमानों की तरफ़ इशारा नहीं था बल्कि अहल-ए-अंबार में से अरब क़बीले के लोगों की तरफ़ इशारा था जिनको कुछ पता नहीं था। शेरज़ाद ने कहा मैंने सुना कि मुस्लमान अपनी जानों की पर्वा किए बग़ैर हम पर हमला-आवर हैं और जब भी कोई क़ौम अपनी जानों की पर्वा किए बग़ैर काम करे तो फ़तह उस पर वाजिब हो जाती है। इसलिए जब उनसे हमारी फ़ौज का मुक़ाबला हुआ तो उन्होंने हमारे क़िला और ज़मीनी लश्कर में से एक हज़ार आँखें फोड़ डालें। इस से मुझे मालूम हुआ कि सुलह करना ही बेहतर है। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को और सब मुस्लमानों को अंबार के हालात के बारे में इतमीनान हो गया और अहल-ए-अंबार भी बे-ख़ौफ़ हो कर बाहर आगए तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि वे लोग अरबी ज़बान लिखते पढ़ते हैं। तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो? उन्होंने कहा कि हम अरब की ही एक क़ौम हैं और हम यहां इन अरबों के पास आकर उतरे थे जो हम से पहले यहां आबाद थे और वे पहले अरब बुख़त नस्सर के अह्द में आए थे जब उसने अरबों को आबाद होने की इजाज़त दी थी और फिर यहीं रह पड़े। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा तुमने लिखना किस से सीखा है? उन्होंने कहा कि हमने लिखना अरबी क़बीला बनू अयाद से सीखा है। इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अंबार के अतराफ़ के लोगों से भी सुलह कर ली।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 323-322, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)
(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 209, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर जंग ऐनुल तमर भी बारह हिज्री में लड़ी गई, उस का वर्णन है। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो अंबार की फ़तह से फ़ारिग़ हुए और वह मुकम्मल तौर पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के क़बज़ा में आ गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस के क़रीबी इलाक़ा ऐन नुल तमर का क़सद किया जो इराक़ और सहराए शाम के मध्य सहरा के किनारे वाक़्य है। अंबार से ऐनुल तमर तक पहुंचने में तीन दिन लगे। ईरानियों की तरफ़ से वहां का हाकिम महरान बिन बहिराम था। वह अजमियों के एक बड़े लश्कर के साथ वहां मौजूद था। ईरानी फ़ौज के इलावा अरब के मुख़्तलिफ़ बदवी क़बायल भी वहां मौजूद थे जिनका सरदार इक्का बिन अबी इक्का था। जब उन लोगों ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ सुना तो इक्का ने महरान से कहा अरब अरबों से जंग करना ख़ूब जानते हैं। अतः हमें और ख़ालिद को छोड़ दो। इस को यह ज़ोअम था कि हमें पता है हम उनसे किस तरह जंग करेंगे। महरान ने कहा तुमने ठीक कहा है कि अरबों से लड़ने में तुम ऐसे ही माहिर हो जैसे हम अजमियों से लड़ने में माहिर हैं। इस तरह उसने अक्का को धोखा दिया और इस के ज़रीया अपना बचाओ किया और उसने कहा तुम उनसे लड़ो अगर तुम्हें हमारी ज़रूरत हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। जब अक्का हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाबले के लिए चला गया तो अजमियों ने अक्का के मुताल्लिक़ इंतिहाई सख़्त ज़बान प्रयोग करते हुए महरान से कहा। तुझे किस चीज़ ने आमादा किया था कि तुम उस से यह बात करो। उसने कहा तुम मुझे छोड़ दो। मैंने वही चाहा जो तुम्हारे लिए बेहतर और मुस्लमानों के लिए बुरा है। निसंदेह तुम्हारे पास वे बंदा आ रहा है जिसने तुम्हारे बादशाहों तक को क़तल कर दिया है, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कहा, बड़े ज़बरदस्त सिपहसालार हैं और तुम्हारी शौकतऔर सतवत को रौंद कर रख दिया है। अतः मैंने तो अक्का को उनके मुक़ाबले में बतौर ढाल प्रयोग किया है। अगर उनको ख़ालिद के मुक़ाबले में फ़तह हासिल हुई तो यह फ़तह तुम्हारी होगी और अगर मामला उस के वपरीत हुआ तो तुम मुस्लमानों के मुक़ाबले में नहीं जाओगे परन्तु इस हाल में कि वे कमज़ोर पड़ चुके होंगे। फिर हम उनसे जंग करेंगे तो हम ताक़तवर और वे कमज़ोर होंगे। यह बात सुनकर उन्होंने महरान की राय की बरतरी का एतराफ़ कर लिया। महरान वहीं ऐनुल तमर में मुक़ीम रहा और अक्का ने

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाबले के लिए रास्ते में पड़ाव डाल लिया। (उद्धरित हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हैकल, पृष्ठ 288-289)(तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 324 ख़बर ऐनुल तमर, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

अक्का अभी अपने लश्कर की सफ़ें ही दरुस्त कर रहा था कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने बज़ात-ए-ख़ुद इस पर हमला कर दिया और उसे क़ैद कर लिया और इस का लश्कर बग़ैर लड़ाई के ही शिकस्त खा कर भाग गया और उनमें से अक्सर को क़ैद कर लिया गया।

जब यह ख़बर महरान तक पहुंची तो वे अपने लश्कर को लेकर फ़रार हो गया और उन्होंने क़िला छोड़ दिया। जब शिकस्त खाने वाले इस क़िला तक पहुंचे, इस में पनाह ली और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनका घेराव कर लिया जिस पर उन्होंने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो से अमान तलब की परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्कार कर दिया। उन्होंने आप रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़ैसला क़बूल करते हुए हथियार डाल दिए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें क़ैदी बना लिया और अक्का और जो लोग उसके साथ मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग में शामिल थे उन सबको क़तल कर दिया और जो क़िला में थे उनको क़ैद कर लिया और जो सामान क़िला में मौजूद था इस को बतौर ग़नीमत ले लिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके कलीसिया के अंदर चालीस लड़कों को पाया जिन्हें ईसाईयों ने गिरवी बना लिया था। ये लड़के बेशतर अरबी नज़ाद थे। इन लड़कों को इस्लामी तारीख़ में इसलिए एहमियत हासिल है कि उनकी औलाद में से ऐसे बड़े बड़े लोग पैदा हुए हैं जिन्हों ने इस अह्द में और बाद के अह्द की तारीख़ पर गहरे और ने मिटने वाले नुक़ूश छोड़े हैं। इन लड़कों में मुहम्मद बिन सीरियन के वालिद सीरियन, मूसा बिन नसीर के वालिद नसीर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम हमरान भी शामिल थे। सीरियन इराक़ के रहने वाले थे। मार्का ऐनुल तमर में क़ैदी हुए और हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम बने। वे बहुत बड़े कारीगर थे। उन्होंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मुकातबत करते हुए आज़ादी हासिल कर ली थी। उनके बेटे का नाम मोहम्मद बिन सीरीन था जो मशहूर ताबई थे और तफ़सीर और हदीस और फ़िक़्ह और ताबीर रोया इत्यादि फ़नून में इमाम थे। यह मुहम्मद बिन सीरीन उनके बेटे थे जो जंग में क़ैदी बनाए गए थे और फिर बाद में उन्होंने आज़ादी ले ली। फिर नुसैर थे यह मूसा बिन नुसैर के पिता थे। यह बनू उमय्या के क़ैदियों में से थे। बनू अमय के किसी व्यक्ति ने उन्हें आज़ाद करवाया था। यह अपने बेटे मूसा की वजह से शौहरत रखते हैं। मूसा बिन नुसैर ने उत्तरी अफ़्रीक़ा में शौहरत पाई और तारिक़ बिन ज़ियाद के साथ मिलकर स्पेन में इस्लामी हुकूमत क़ायम करने में बहुत बड़ा किरदार अदा किया था। फिर हमरान बिन अबान भी मार्का ऐनुल तमर के क़ैदियों में से थे। ये यहूद में से थे। उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें आज़ाद करवा दिया।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ास क़ुरब पाने वाले थे। इकतालीस हिज्री में यह कुछ समय के लिए बस्रा के हाकिम बने और बाद में बनू उमय्या की हुकूमत में बड़ा नाम पैदा किया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़तह की ख़ुशख़बरी और ख़ुमस हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भेज दिया।

(अल् कामिल फ़ील तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 246 वर्णन फ़तह ऐनुल तमर, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.) (सैर अल् सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 277-278 दारुल इशाअत कराची)(फ़तूहुल बुल्दान अनुवादक, पृष्ठ 325-346)(مرآۃ الزمان فی تواریخ الاعیان, भाग 6 पृष्ठ 228 दारुल क़ुतुब इल्मिया)(तारीख़ तिबरी, भाग 3 पृष्ठ 169- 524 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

अंबार और ऐनुल तमर की फ़तह के बाद ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वलीद बिन उक़बा को ख़ुमस देकर फ़तह की ख़ुशख़बरी के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भेजा। उन्होंने मदीना पहुंच कर उन्हें समस्त हालात से अवगत किया और बताया कि ख़ालिद ने उनके अहकाम नज़रअंदाज करते हुए ही इसलिए छोड़ा और अंबार और ऐनुल तमर पर इसलिए चढ़ाई की कि उन्हें हीरा में क़ियाम किए हुए पूरा एक साल हो गया था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिदायत दी थी वहां हीरा में इंतेज़ार करना लेकिन बहरहाल उन्होंने यह किया। इन हालात में इसी को बेहतर समझा और ईआज़ का कुछ पता न था कि वे कब दौमतुल जिंदल से फ़ारिग़ हो कर ख़ालिद की मदद के लिए ही पहुंचते हैं। देर हो गई थी। अयाज़ वहां पहुंच नहीं रहे थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी अयाज़ की सुस्त-रवी से तंग आ चुके थे और उनका ख़्याल था कि वह मुस्लमानों के हौसले पस्त कर रहे हैं। अगर दुश्मन को ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के इन कारनामों की सूचना मिलती रहतीं जो उन्होंने इराक़ में अंजाम दिए थे तो निसंदेह वह अयाज़ की कमज़ोरी से फ़ायदा उठा कर मुस्लमानों को सख़्त नुकसान पहुंचाते।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अकबर अज़ मुहम्मद हैकल, पृष्ठ 325- इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

फिर जंग दूमतुल जंदल है। यह भी 12 हिज्री की है। दूमतुल जंदल दमिशक़ से पाँच रातों और मदीना से पंद्रह रातों की मुसाफ़त पर एक शहर है। अर्थात उस ज़माने के जो सफ़र के ज़राए थे उस के अनुसार। शाम का यह शहर मदीना के सबसे ज़्यादा क़रीब है। हज़रत अयाज़ बिन ग़नम जिन्हें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दौमा की तरफ़ भेजा था उन्हें तवील मुद्दत तक दुश्मन की तरफ़ से मुज़ाहमत का सामना करना पड़ा इसलिए वे हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो से नहीं मिल सके। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वलीद बिन उक़बा को ऐनुल तमर की फ़तह की ख़बर देकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में रवाना किया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अयाज़ के बारे में परेशानी हुई। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीद बिन उक़बा को अयाज़ की मदद के लिए भेज दिया।

(अबू बकर अल् सिद्दीक़ अव्वल खोल्फा-ए राशेदीन अज़ मुहम्मद रज़ा, पृष्ठ 124 दारुल अहया क़ुतुब अरबिया 1950 ई.)

जब वलीद बिन उक़बा हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचे तो देखा कि हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुश्मन को घेर रखा है और दुश्मन ने उन्हें घेर रखा है और उनका रास्ता भी रोक रखा है। वलीद बिन उक़बा ने हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि बाज़-औक़ात फ़ौज की बड़ी संख्या के मुक़ाबले में एक अक़ल की बात ज़्यादा कारगर होती है। आप हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास क़ासिद भेजीए और उनसे मदद तलब कीजिए। हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए वलीद की बात मानने के सिवा कोई चारा न था क्योंकि उन्हें दूमतुल जंदल पहुंचे हुए साल भर हो चुका था और अभी तक फ़तह की कोई शक्ल न नज़र आती थी। हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने ऐसा ही किया। जब उनका क़ासिद मदद तलब करने के लिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचा तो उस वक़्त ऐनुल तमर फ़तह हो चुका था। उन्होंने हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम एक मुख़्तसर ख़त देकर क़ासिद को फ़ौरन वापस कर दिया कि उनकी परेशानी कुछ कम हो जाए। ख़त में लिखा था कि थोड़ा ठहरें। सवारियां आपके पास पहुंच रही हैं जिन पर शेर सवार होंगे और तलवारें चमक रही होंगी और लश्कर फ़ौज दर फ़ौज पहुंच रहे होंगे। फिर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की दूमतुल जंदल रवानगी के बारे में आता है कि जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ऐनुल तमर की फ़तह से फ़ारिग़ हुए तो इस में अवैम बिन काहिल इस्लमी को निगरान निर्धारित किया और ख़ुद अपनी फ़ौज को जो अयनुल तमर में थी लेकर दूमतुल जंदल की तरफ़ रवाना हुए। तीन सौ मील का यह फ़ासला हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस रोज़ से भी कम अरसा में तै किया।

अहले दोमा को हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के आने की इत्तला मिली तो उन्होंने अपने हलीफ़ क़बायल से मदद तलब की। यह क़बायल अपने साथ कई और क़बायल को मिला कर दूमतुल जंदल पहुंचे और उनकी तादाद उस वक़्त से कई गुना ज़्यादा थी जब एक साल क़बल हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी सरकूबी के लिए पहुंचे थे। दूमतुल जंदल की फ़ौज दो बड़े हिस्सों में मुनक़सिम थी।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 290-291) (तारीख़ तबरी अज़ अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर, भाग 2 पृष्ठ 324-325 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी अनुवादक उर्दू, पृष्ठ 418 फ़ुर्क़ान ट्रस्ट मुज़फ़्फ़रगढ़)

फ़ौज के दो सरदार थे। एक उकेदर बिन अब्दुल मालिक और दूसरा जोदी बिन रबीया। जब उनको हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की आमद की इत्तिला मिली तो उनमें इख़्तेलाफ़ पैदा हो गया। उकैदर ने कहा कि मैं ख़ालिद को ख़ूब जानता हूँ इस से बढ़कर कोई व्यक्ति इक़बालमंद नहीं है और न इस से ज़्यादा कोई जंग में तेज़ है। जो क़ौम ख़ालिद से मुक़ाबला करती है ख़ाह वे संख्या में कम हो या ज़्यादा ज़रूर शिकस्त पाती है। तुम लोग मेरे मश्वरे पर अमल करो और उन लोगों से सुलह कर लो परन्तु उन्होंने इसका इंकार कर दिया इस पर उकैदर ने कहा मैं ख़ालिद के साथ लड़ने मैं तुम्हारा साथ नहीं दे सकता। तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। यह कह कर वह वहां से चल दिया। इस की इत्तिला हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को हो गई। उन्होंने उस का रास्ता रोकने के लिए आसिम बिन अम्र को भेजा। सुलह के लिए राज़ी नहीं हुआ था बल्कि वहां से छोड़ के चला गया, अपने इलाक़े की तरफ़ जा रहा था।

आसिम ने उकैदर को जा पकड़ा। उसने कहा तुम मुझे अपने अमीर ख़ालिद के पास ले चलो। जब वह हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने पेश किया गया तो उन्होंने उकैदर को क़तल करवा दिया और इस के समस्त सामान पर क़बज़ा कर लिया।

(तारीख़ तबरी अज़ अबू जाफ़र मुहम्मद जरीर, भाग 2 पृष्ठ 325 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

अब यह सवाल पैदा होता है कि उकैदर को क़ैद करने के बाद क्यों क़तल किया गया था तो इस की वजह यह बयान हुई है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को ग़ज़व-ए-तबूक के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उकैदर की तरफ़ रवाना किया था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु उसको क़ैद कर के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में ले आए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस पर एहसान कर के उसे छोड़ दिया था और उस से अनुबंध लिखवाया था लेकिन उसने इसके बाद वादा तोड़ा और उसने मदीना की हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी थी।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 327-328 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

जिस वक़्त उकैदर को हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के दूमतुल जंदल आने की इत्तिला मिली तो यह अपनी क़ौम का साथ छोड़कर निकल गया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को दूमतुल जंदल के रास्ते में इस की ख़बर मिली जैसा वर्णन हुआ है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आसिम बिन अम्र को इस के गिरफ़्तार करने के लिए रवाना किया। उन्होंने उसे गिरफ़्तार कर लिया और उसकी साबिक़ा ख़ियानत की वजह से हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसको क़तल करने का हुक्म दिया और उसको क़तल कर दिया गया। इस तरह अल्लाह तआला ने इस की ख़ियानत और ग़द्दारी की वजह से उसे हलाक किया।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़सीत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 419)

कुछ रिवायात से यह भी मालूम होता है कि उसे क़ैद करके मदीना भेज दिया गया था और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में उसे रिहाई मिली और वह मदीना से इराक़ चला गया। वहां ऐनुल तमर के मुक़ाम दोमा ही में क़ियाम पज़ीर हुआ और आख़िर तक वहीं रहा। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 328 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)ये दो रिवायतें हैं।

बहरहाल अहल-ए-दोमा से लड़ाई का जो वाक़िया है इस बारे में लिखा है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो आगे बढ़कर दोमा पहुंचे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दोमा को अपनी और हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ौज के बीच में ले लिया। नसरानी अरब जो अहल-ए-दोमा की मदद के लिए आए थे वे क़िला के अतराफ़ में बैरूनी जानिब थे क्योंकि क़िला में उनकी गुंजाइश नहीं थी। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो इतमेनान से सफ़-आराई कर चुके तो दोमा के सरदारों ने क़िला से निकल कर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमला कर दिया। दोनों फ़रीक़ों में घमसान की जंग हुई। अंततः हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने मद्द-ए-मुक़ाबिल को शिकस्त दी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक सरदार जोदी और हज़रत अकरा बिन हाबिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने वदीया को गिरफ़्तार कर लिया जो क़बीला कलब का सरदार था। बाक़ी लोग पीछे हो कर क़िला बंद हो गए परन्तु क़िला में काफ़ी गुंजाइश नहीं थी। जब क़िला भर गया तो अंदर वालों ने बहुत से लोगों को बाहर छोड़ कर क़िला का दरवाज़ा बंद कर लिया जिसकी वजह से बाहर के लोग हैरान-ओ-परेशान फिरने लगे। आसिम बिन अम्र ने कहा हे तमीम! अपने हलीफ़ क़बीला कलब की मदद करो और उनको पनाह दो क्योंकि तुम्हें उनकी इमदाद का ऐसा अवसर फिर कभी नहीं मिलेगा। यह सुनकर बनू तमीम ने उनकी मदद की। इस रोज़ आसिम के अमान देने की वजह से कलब क़बीला की जान बच गई। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़िला की तरफ़ पीछे होने वालों का पीछा किया और इतने आदमी क़तल किए कि उनकी लाशों से क़िला का दरवाज़ा बंद हो गया। फिर जोदी और उसके साथ बाक़ी क़ैदियों को भी क़तल कर दिया। केवल कलब के क़ैदी बच गए क्योंकि आसिम और अकरा और बनू तमीम ने कह दिया था कि हमने उनको अमान दी है। फिर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो क़िला के दरवाज़े पर मुसलसल चक्कर लगाते रहे यहां तक कि इस को तोड़ कर दम लिया। मुस्लमान क़िला में घुस गए। योद्धाओं को क़तल किया गया और नौउम्रों को क़ैदी बना लिया गया। (तारीख़ तबरी अज़ अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर भाग 2 पृष्ठ 325 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

फ़तह के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अकरा बिन हाबिसको अंबार वापस जाने का हुक्म दिया और ख़ुद दूमतुल जंदल में क़ियाम किया।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 293)

दूमतुल जंदल के फ़तह होने से मुस्लमानों को जंगी एतबार से बड़ा अहम मुक़ाम हासिल हो गया क्योंकि दूमतुल जंदल ऐसे रास्ते पर वाक़्य था जहां से तीन सिम्तों में अहम रास्ते निकलते थे।

दक्षिण में जज़ीरा नुमाए अरब और उत्तर पूर्व में इराक़ और उत्तर पश्चिम में शाम। तिब्बी तौर पर ये शहर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज की तवज्जा और एहतेमाम का मुस्तहिक़ था जो इराक़ में लड़ाई करते थे और शाम की सरहदों पर खड़ी थी। यही सबब था कि हज़रत अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने दूमतुल जंदल से हरकत नहीं की बल्कि वहां डटे रहे और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के वहां पहुंचने का इंतेज़ार किया। अगर दूमतुल जंदल मुस्लमानों के क़बज़ा में नहीं आता तो इराक़ में मुस्लिम फ़ौजों के लिए ख़तरात का सामना था।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 419-420)

फिर जंग हसीद और ख़नाफ़स का वर्णन है। हसीद कूफ़ा और शाम के मध्य एक छोटी सी वादी है। ख़नाफ़स इराक़ की तरफ़ अंबार के क़रीब एक जगह है। लिखा है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु दौमा में रहते थे और अजमी बदस्तूर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़, मुस्लमानों के ख़िलाफ़ साज़िशों में व्यस्त थे। अक्का के इंतिक़ाम के जोश में जज़ीरे के अरबों ने अजमियों से साँठगाँठ कर ली थी। इसलिए बग़दाद से ज़रमहर और इसके साथ रोज़-बअंबार की तरफ़ रवाना हुए और दोनों ने हसीद और ख़नाफ़िस पर मिलने का वादा किया। हीरा में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के नायब हज़रत काका बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह ख़बर सुनी तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आबिद बिन फदकी को हसीद की तरफ़ पहुंचने का हुक्म दिया और उर्वा बिन जाद को ख़नाफ़िस की तरफ़ रवाना किया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद दौमा से हीरा वापस आए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु को भी इस की इत्तिला मिली। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का मदायन पर चढ़ाई का इरादा था परन्तु यहां पहुंच कर जब इन वाक़ियात का इलम हुआ तो आपने हज़रत काका बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू लैला को रोज़-ए-बह और ज़रमहर के मुक़ाबले के लिए भेज दिया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उमराउल कैस कलबी का ख़त आया। यह क़बीला क़ज़ाह और कलब पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आमिल थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में यह इस्लाम पर साबित-क़दम रहे थे। उनका ख़त आया कि हुज़ैल बिन इमरान ने मसीख़ में और रबीया बिन बजीर ने सनी और बशर में फ़ौजें जमा की हैं ये लोग अक्का के इंतेक़ाम के जोश में रोज़-ए-बह और ज़रमहर के पास जा रहे हैं। यह मालूम होते ही हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हीरा पर हज़रत अयाज़ बिन ग़नम रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना नायब निर्धारित किया और ख़ुद वहां से रवाना हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़नाफ़िस जाने के लिए वही रास्ता इख़्तेयार किया जिससे काका और अबू लैला गए थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ऐनुल तमर में इन दोनों से मिल गए। यहां आकर आपने हज़रत काका रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर-ए-फ़ौज बनाया और उनको हसीद की तरफ़ रवाना किया और अबू लैला को ख़नाफ़स की तरफ़ भेजा और इन दोनों को हुक्म दिया कि दुश्मन और उनके भड़काने वालों को घेर कर एक जगह जमा करो और अगर वे जमा न हों तो उसी हालत में उन पर हमला कर दो। हज़रत काका रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब देखा कि ज़रमहर और रोज़-ए-बह कोई हरकत नहीं कर रहे तो उन्होंने हसीद की तरफ़ पेशक़दमी की। इस तरफ़ की अरबी-ओ-अजमी फ़ौजों का सरदार रोज़-ए-बह था। जब उसने देखा कि काका उस की तरफ़ आ रहे हैं तो उसने ज़रमहर से मदद तलब की। ज़रमहर ने अपनी फ़ौज पर नायब निर्धारित किया और बज़ात-ए-ख़ुद रोज़-ए-बह की मदद के लिए आया। हसीद में दोनों फ़रीक़ों का मुक़ाबला हुआ। बड़ी शिद्दत की जंग हुई। अल्लाह ने अजमियों की बहुत बड़ी संख्या को क़तल किराया। काका ने ज़रमहर को क़तल किया और रोज़-ए-बह भी मारा गया। इस जंग में कसीर माल-ए-ग़नीमत मुस्लमानों के हाथ

आया। हसीद के भागे हुए लोग ख़नाफ़स में जा कर जमा हो गए। जंग ख़नाफ़िस के बारे में लिखा है कि अबू लैला अपनी फ़ौज और जो सहायता उनके पास आई थी उनको लेकर ख़नाफ़स की तरफ़ निकले। हसीद का शिकस्त ख़ूर्दा लश्कर ज़रमहर के नायब के पास पहुंचा। जब उसको मुस्लमानों की आमद की ख़बर हुई तो वह ख़नाफ़स छोड़ कर सब के साथ मसीख़ भाग गया। वहां का अफ़सर हज़ील था। ख़नाफ़स की फ़तह के लिए अबू लैला को कुछ दुशवारी पेश न आई। इन समस्त फ़ुतूहात की इत्तिला हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में भेज दी गई।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 325-326 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)
(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2, पृष्ठ 307-446) (अल् कामिल फ़ील-तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 205 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

जंग मसीख। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को अहल-ए-हसीद और अहले ख़नाफ़स के भागने की इत्तिला हुई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत काका रज़ियल्लाहु अन्हु, अबू लैला आबिद और उर्वा को एक ख़त लिखा जिसमें उन्होंने उनको एक रात एक वक़्त निर्धारित कर के मसीख़ पर मिलने का वादा किया। मसीख़ हूरान और क़िल्लत के मध्य स्थित है। हूरान भी दमिशक़ के क़रीब एक बड़ा इलाक़ा है जहां बेशुमार बस्तीयां और खेत हैं। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु अयनुल तमर से मसीख़ रवाना हुए और मुक़र्ररा रात को तय-शुदा वक़्त के अनुसार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके अफ़िसरों ने मसीख़ पर एक दम हमला कर दिया और हुज़ैल उसकी फ़ौज और समस्त पनाह गज़ीनों पर तीन अतराफ़ से हमला कर दिया और हुज़ैल चंद लोगों के साथ जान बचा कर भाग गया।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 326 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 109 ज़व्वार अकैडमी कराची)

इस जंग के दौरान दो ऐसे मुस्लमान इस्लामी फ़ौज के हाथ मारे गए जो मसीख़ में मुक़ीम थे और जिनके पास हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का अता किया हुआ अमान नामा भी था। जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके मारे जाने की इत्तिला मिली तो आपने उनका ख़ून बहा अदा कर दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसरार किया कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके इस फ़ेअल की सज़ा मिलनी चाहिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े पुरजोश थे कि क्यों मुस्लमानों को क़तल किया लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि जो मुस्लमान दुश्मन की सरज़मीन में दुश्मन के साथ क़ियाम पज़ीर होंगे उनके साथ ऐसी सूरत-ए-हाल पैदा हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। इस तरह हो जाता है। जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी औलाद की परवरिश और उनका ख़्याल रखने के विषय में वसीयत भी फ़रमाई।

(हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ हैकल, पृष्ठ 311)(तारीख़ तिब्री, भाग 2, पृष्ठ 327 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

सन्नी और ज़मील का वाक़िया। ज़मील एक मुक़ाम है। इस का नाम बशर भी आता है। यह सन्नी मुक़ाम के साथ है। इक्का जो मार्का ऐनुल तमर में मारा गया था उसके इंतेक़ाम के जोश में रबीया बिन बजीर अपनी फ़ौज को लेकर सन्नी और बशर में उतरा और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मसीख़ के मार्का को पार करके काका और अबू लैला को अपने आगे रवाना कर दिया और एक रात निर्धारित कर के तै किया कि हम सब मसीख़ की तरह यहां भी तीन मुख़्तलिफ़ सिम्तों से दुश्मन पर हमला करेंगे। इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो मसीख़ से चल कर मुख़्तलिफ़ मुक़ामात से होते हुए ज़मील आए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सन्नी से आग़ाज़ किया। यहां उनके दोनों साथी भी उनसे मिल गए। इन तीनों ने रात के वक़्त तीनों अतराफ़ से रबीया की फ़ौज पर और उन लोगों पर जो बड़ी शान से लड़ने के लिए जमा हुए थे शब-ख़ून मारा और तलवारें सौंत कर उनका ऐसा सफ़ाया किया कि कोई भाग कर कहीं ख़बर भी न दे सका। उनकी औरतें गिरफ़्तार कर ली गईं। बैतुल माल का ख़ुमस हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भेज दिया गया और बाक़ी माल-ए-ग़नीमत मुस्लमान लश्कर में तक़सीम कर दिया गया। हुज़ैल जिसने जंग मसीख़ में भी शिकस्त खा कर जान बचाई थी वह हसब वादा रबीया बिन बजीर की फ़ौज में शामिल हुआ। अब फिर उसने भाग कर ज़मील में इताब के पास पनाह ली। इताब एक अज़ीमुश्शान लश्कर के साथ बशर में क़ियाम पज़ीर था। इस से पहले कि इस तक रबीया के ख़ातमा की ख़बर पहुँचती हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस पर भी तीन अतराफ़ से हमला कर दिया। इस मार्का में भी कसरत से आदमी क़तल हुए और बेशुमार माल-ए-ग़नीमत मुस्लमानों के हाथ आया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने माल-ए-ग़नीमत मुस्लमानों में तक़सीम कर दिया और ख़ुमस हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भेज दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो बशर के क़रीब एक मुक़ाम रज़ाब की तरफ़ मुड़े। वहां का अफ़्सर हिलाल बिन इक्का था। इस की फ़ौज को जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के आने की इत्तिला मिली तो वह इस से अलग हो गई। मजबूरन हिलाल वहां से भाग निकला और मुस्लमानों ने बग़ैर किसी दिक़्क़त के रज़ाब को अपने क़बज़ा में कर लिया।

(तिबरी, भाग 2, पृष्ठ 327-328 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत)
(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 170 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर जंग फ़राज़ के बारे में आता है। फ़राज़ बस्रा और यमामा के मध्य एक जगह का नाम है। यहां शाम, इराक़ और जज़ीरे के रास्ते आकर मिलते हैं। यह मार्का मुस्लमानों और रोमियों के मध्य ज़ी कादा बारह हिज्री में फ़राज़ के मुक़ाम पर हुआ। इसी निसबत से यह जंग जंग-ए-फ़राज़ के नाम से मशहूर हुई। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु रज़ाब पर क़बज़ा कर के फ़राज़ पहुंचे। इस सफ़र में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो को बहुत सी लड़ाईयां पेश आईं। यहां हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो रमज़ान के रोज़े भी नहीं रख सके। ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के इन अचानक हमलों और क़बायल के उनके मुक़ाबिल पर आजिज़ रहने की ख़बरें इराक़ भर में फैल चुकी थीं और सहरा में रहने वाले समस्त क़बायल ख़ौफ़ज़दा हो चुके थे। उन्होंने मुस्लमानों के आगे हथियार डालने और उनकी इताअत क़बूल करने ही में अपनी आफ़ियत समझी। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी फ़ौजों के हमराह दरिया-ए-फ़ुरात के साथ साथ उत्तरी इलाक़ों की तरफ़ पेशक़दमी शुरू कर दी और वह जहां भी पहुंचते वहां के बाशिंदे उनसे मुसालहत कर लेते और उनकी इताअत करने का इक़रार करते। आख़िर वह फ़राज़ पहुंच गए जहां शाम इराक़ और अल्जज़ीरा की सरहदें मिलती थीं। फ़राज़ इराक़ और शाम के इंतेहाई उत्तर में वाक़्य है। अगर ईआज़ बिन ग़नम की क़िस्मत साथ देती और वे इबतेदा ही से दूमतुल जंदल फ़तह कर लेते तो ग़ालिबन ख़ालिद यहां तक न पहुंचते क्योंकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का मंशा सारे इराक़ और शाम को फ़तह करने का नहीं था। वे केवल यह चाहते थे कि इन दोनों मुल्कों की सरहदों पर जो अरब से मिलती हैं अमन-ओ-अमान क़ायम हो जाए और उन अतराफ़ से ईरानी और रूमी अरब पर हमला-आवर न हों सकें लेकिन अल्लाह को यही मंज़ूर था कि ये दोनों मुमलकतें मुकम्मल तौर पर मुस्लमानों के क़बज़ा में आ जाएं इसलिए उसने ऐसे अस्बाब पैदा कर दिए कि ख़ालिद इराक़ी क़बायल को मुतीअ करने की ग़रज़ से इंतिहाई उत्तर तक चले गए और इस तरह मुस्लमानों के लिए उपरी जानिब से शाम पर हमला करने का रास्ता खुल गया।

ईरानी सरहदों से रोमियों पर हमला का रस्ता खुल जाना एक ऐसा मोजिज़ा था जिसका ख़्याल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी नहीं आ सका और यह कारनामा ऐसे व्यक्ति के हाथों रौनुमा हुआ जिसकी नज़ीर पैदा करने से अरब और अजम की औरतें वास्तव में आजिज़ रहीं जैसा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया था। फ़राज़ में ख़ालिद को कामिल एक महीने तक क़ियाम करना पड़ा। यहां भी उन्होंने ऐसी जुर्रत और अज़म-ओ-इस्तक़लाल का प्रदर्शन किया कि वे अपनी नज़ीर आप है। वे चारों तरफ़ से दुश्मन में घिरे हुए थे। मशरिक़ी जानिब ईरानी थे जो उनके ख़ून के प्यासे हो रहे थे। मग़रिबी जानिब रूमी थे जिनका यह ख़्याल था कि अगर उस वक़्त ख़ालिद की जमईयत को तबाह-ओ-बर्बाद नहीं किया तो फिर यह सेलाब रोके न रुकेगा। रोमियों और मुस्लमानों के मध्य सिर्फ़ दरिया-ए-फ़ुरात हायल था। उनके इलावा चारों तरफ़ बदवी क़बायल आबाद थे जिनके बड़े बड़े सरदारोँ को क़तल कर के ख़ालिद ने उनके दिलों में इंतेक़ाम की एक न ख़त्म होने वाली आग भड़का दी थी। इस नाज़ुक सूरत-ए-हाल से ख़ालिद लाइलम नहीं थे। अगर वे चाहते तो ही वापस आकर अपनी क़ुव्वत-ओ-ताक़त में इज़ाफ़ा करते हुए फिर रोमियों के मुक़ाबले के लिए रवाना हो सकते थे। उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि दुश्मन को सामने देखकर ख़ालिद के लिए सब्र करना नामुमकिन हो जाता था। तबीयत ऐसी थी उनकी। उनकी नज़रों में क्या ईरानी और क्या अहले बादिया सब काबिल तसख़ीर थे। उनकी अज़ीमुश्शान फ़ौजों को वे न पहले कभी ख़ातिर में लाए और न आइन्दा ख़ातिर में लाने को तैयार थे, इसलिए वे बड़े इतमेनान से

लड़ाई की तैयारियों में मशग़ूल रहे। उधर रोमियों को अभी तक ख़ालिद से वास्ता नहीं पड़ा था और वे उनके हमले की शिद्दत से नावाक़िफ़ थे। जब इस्लामी फ़ौजें फ़राज़ में इकट्ठी हो गईं और बराबर एक महीने तक उनके सामने डेरे डाले पड़ी रहें तो उन्हें बहुत जोश आया और उन्होंने अपने क़रीब की ईरानी चौकियों से मदद मांगी।

ईरानियों ने बड़ी ख़ुशी से रोमियों की मदद की क्योंकि मुस्लमानों ने उन्हें ज़लील-ओ-रुस्वा कर दिया था और उनकी शान-ओ-शौकत को ते-ओ-बाला करके उनका ग़रूर ख़ाक में मिला दिया था। ईरानियों के इलावा तग़ल्लुब, अयाद और नम्र के अरबी नसल क़बायल ने भी रोमियों की पूरी पूरी मदद की क्योंकि वे अपने सरदारों और सम्मानित लोगों के क़तल को भूले नहीं थे। इसलिए रोमियों, ईरानियों और अरबी नसल क़बायल का एक बहुत बड़ा लश्कर मुस्लमानों से लड़ने के लिए रवाना हुआ। दरिया-ए-फ़ुरात पर पहुंच कर उन्होंने मुस्लमानों को कहला भेजा कि तुम दरिया को उबूर करके हमारी तरफ़ आओगे या हम दरिया को उबूर करके तुम्हारी तरफ़ आएं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया तुम ही हमारी तरफ़ आ जाओ। तुम लड़ने आए हो तो उधर आ जाओ। इसलिए दुश्मन का लश्कर दरिया उबूर कर के दूसरी जानिब उतरना शुरू हुआ। इस दौरान में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने लश्कर की अच्छी तरह और बाक़ायदा सफ़ें क़ायम करके उन्हें दुश्मन से लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार कर दिया। जब लड़ाई शुरू होने का वक़्त आया तो रूमी लश्कर के सिपहसालार ने फ़ौज को हुक्म दिया कि समस्त क़बायल अलैहदा अलैहदा हो जाएं ता कि मालूम हो सके किस गिरोह ने ज़्यादा शानदार कारनामा अंजाम दिया है इसलिए सारी फ़ौज अपने अपने सरदारों के साथ अलैहदा अलैहदा हो गई। लड़ाई शुरू हुई तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि वे चारों तरफ़ से दुश्मन को घेर लें और उन्हें एक जगह जमा कर दें। इस तरह पै दर पै हमले करें कि सँभलने का अवसर ही न मिल सके। इसलिए ऐसा ही हुआ। इस्लामी दस्तों ने रूमी लश्कर को घेर कर एक जगह जमा कर दिया और उन पर पुरज़ोर हमले शुरू कर दिए। रोमियों और उनके हलीफ़ों का ख़्याल था कि वे क़बायल को अलैहदा अलैहदा मुस्लमानों के मुक़ाबले में भेज कर लड़ाई को ज़्यादा तूल दे सकेंगे और जब मुस्लमान थक कर चूर हो जाऐंगे तो उन पर भरपूर हमला करके उन्हें मुकम्मल तौर पर शिकस्त दे देंगे लेकिन उनका यह ख़याल-ए-ख़ाम साबित हुआ और उनकी तदबीर ख़ुद उन पर उलट पड़ी।

जब मुस्लमानों ने उन्हें एक जगह जमा करके उन पर हमले शुरू किए तो वे उनकी ताब न ला सके और बहुत जल्द शिकस्त खा कर मैदान-ए-जंग से फ़रार होने लगे लेकिन मुस्लमान उन्हें कहाँ छोड़ने वाले थे, उन्होंने उनका पीछा किया और दूर तक उन्हें क़तल करते चले गए। समस्त मुअर्रिख़ीन इस अमर पर सहमत हैं कि इस मार्का में मैदान-ए-जंग और बाद पीछा करने में दुश्मन के एक लाख आदमी काम आए। फ़तह के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़राज़ में दस दिन क़ियाम किया और पच्चीस ज़ी कादा बारह हिज्री को उन्होंने अपनी फ़ौज को वापस हीरा की तरफ़ कूच करने का हुक्म दिया। (हज़रत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन अनुवादक, पृष्ठ 312 से 315 बुक कॉर्नर शोरूम जहलुम) (तारीख़ तिब्री, भाग 2, पृष्ठ 328,दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 276)

एक मुसन्निफ़ इस जंग पर तबसरा करते हुए लिखता है कि मुस्लमानों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में पहली मर्तबा रुम-ओ-ईरान की दोनों बड़ी ताक़तों और उनके साथी अरब फ़ौजों का मुक़ाबला किया। इसके बावजूद मुस्लमानों को ज़बरदस्त फ़तह हासिल हुई और बुला-शुबा यह मार्का तारीख़ी और फ़ैसलाकुन मारकों में से रहा। जवकि उस को वह शौहरत हासिल न हुई जो अन्य बड़े मारकों को हासिल हुई लेकिन बहरहाल इस से कुफ़्फ़ार की अंदरूनी क़ुव्वत ख़त्म हो गई ख़ाह वह ईरान से ताल्लुक़ रखते हों या रुम से या अरब और इराक़ से। इराक़ में ख़ालिद सैफ़ुल्लाह ने जो मार्के विजय किए यह उस की आख़िरी कड़ी थी। इस मार्का के बाद ईरानियों की शान-ओ-शौकत ख़ाक में मिल गई। फिर इसके बाद उनको ऐसी जंगी क़ुव्वत हासिल न हो सकी जिससे मुस्लमान ख़ौफ़ज़दा हों।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत अज़सलाबी, पृष्ठ 423)

एक इतिहासकार ने जंग-ए-फ़राज़ की एहमियत को कुछ यूं बयान किया है कि उलैस में मुस्लमानों की फ़तह के बाद ईरानी लश्कर की कमर टूट गई। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पेशक़दमी जारी रखी और तर्तीब के साथ अमग़ाशया, हीरा, अंबार, ऐनुल तमर और दूमतुल जंदल को फ़तह कर लिया और अंततः फ़राज़ के मुक़ाम तक जा पहुंचे। फ़राज़ दरिया-ए-फ़ुरात पर वाक़्य एक शहर था जो कि सल्तनत-ए-रुम की सरहद से बहुत नज़दीक था। यहां रोमियों, ईरानियों और ईसाई क़बायल का मुत्तहदा लश्कर मुस्लमानों से लड़ा लेकिन हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुफ़्फ़ार की इस भारी जमईयत को भी शिकस्त-ए-फ़ाश कर दी। फ़ातेह इराक़ सय्यदना ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इराक़ को एक साल दो माह में फ़तह कर लिया। उनके साथ कुल दस हज़ार फ़ौजी थे और तक़रीबन इतने ही फ़ौजी अन्य इस्लामी सिपहसालारों के साथ थे। इतनी क़लील फ़ौज ने इस मुद्दत में जो शानदार कारनामे सरअंजाम दिए वह तारीख़ में बेमिसाल हैं। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु हर मार्का में शामिल हुए, उन्हें किसी अवसर पर भी शिकस्त का मुह नहीं देखना पड़ा। दरबार-ए-रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को सैफ़ुल्लाह अर्थात अल्लाह की तलवार का ख़िताब मिला था और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस ख़िताब का हक़ अदा कर दिया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो इलाक़े फ़तह किए उनमें इतना उम्दा बंद-ओ-बस्त किया कि लोग ईरानी हुकूमत के मुक़ाबले में अरब हुकूमत को पसंद करने लगे। बहरहाल इराक़ की आख़िरी फ़तह फ़राज़ मुक़ाम की फ़तह थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो दस रोज़ तक फ़राज़ में क़ियाम पज़ीर रहे। फिर आधा लश्कर लेकर शाम के महाज़ पर रवाना हो गए।

इराक़ की फ़तह पर एक नज़र डालते हैं। इस बारे में लिखा है कि इराक़ पर चढ़ाई बहुत बड़ी कामयाबी की अलामत थी। वहां मुस्लमानों ने फ़ारसी अफ़्वाज को जो उनसे संख्या में और जंग के समान में कहीं ज़्यादा ताक़तवर थीं पै दर पै तबाहकुन शिकस्तें दीं। याद रहे कि फ़ारसी लश्कर अपने वक़्त का सबसे मोहलिक जंगी लश्कर था। अह्द सिद्दीक़ी का यह एक ऐसा अज़ीमुश्शान कारनामा है जिसकी मिसाल तारीख़ पेश करने से क़ासिर है। इस में शक नहीं कि अस्करी मैदान में तमाम-तर कामयाबी ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्ह और उनके रफ़क़ा-और-सिपहसालारों की मर्हूने मिन्नत है परन्तु इस हक़ीक़त से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि इन फ़ुतूहात और कामयाबियों को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसी अज़ीम शख़्सियत की सरपरस्ती हासिल थी। तारीख़ गवाह है कि किसी फ़ौज का कोई बड़े से बड़ा बासलाहियत सिपहसालार ऐसे आत्मविश्वास और निश्चिंतता और वफ़ादारी और ख़ुलूस का प्रदर्शन नहीं कर सकता जब तक उसे देश के प्रधान की ज़ाती विशेषताओं और

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

आला किरदार ने प्रभावित न क्या हो।

मुनकेरीन और इर्तेदाद और बग़ावत की जंगों से लेकर फ़तह इराक़ के समस्त मराहिल के दौरान जिस ज़ाती नमूने, हुस्ने इंतेज़ाम और इस्तक़लाल का प्रदर्शन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पेश किया उसने उम्मत मुस्लिमा के दिलों को बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी के लिए गरमाए रखा। जहां उनके समस्त अहकामात और हिदायात जामईयत और फ़हम-ओ-फ़िरासत से लबरेज़ थे वहां उनका ज़ाती किरदार उनसे कहीं ज़्यादा मुमताज़ था। कोई राहनुमा इस्तक़लाल और उलुलअज़मी का इस से बढ़कर सबूत क्या पेश कर सकता है कि इबतेदा से इंतिहा तक कोई ऐसा अवसर नज़र नहीं आया जहां उन्होंने अपने जारी करदा अहकाम और ज़वाबत को ज़ाती वक़ार या किसी शख़्सी दबाओ के सामने झुक कर तबदील किया हो। यही नहीं बल्कि बासलाहीयत मातहतों की कार-गुज़ारी के लिए आला मयार को क़ायम रखने के लिए और ईसार-ओ-क़ुर्बानी के जज़बे को बढ़ाने के लिए जिस हुस्न-ए-ज़न और विशवास का उदाहरण हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पेश किया उस की मिसाल ढूंढ़े से नहीं मिलती। क्या कोई मातहत ऐसे राहनुमा के अहकाम को अमली जामा पहनाने में कोई कसर उठा रखेगा जो बज़ात-ए-ख़ुद अपने राहनुमा के इर्शादात और इक़दार की ख़ातिर इंतिहाई वफ़ा-दारी और बे दरेग़ क़ुर्बानी पेश करने का ज़िंदा उदाहरण हो जैसा कि सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद थे। सय्यदना हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की अस्करी क़ाबिलीयत बजा तौर पर उनको दुनिया के अज़ीम सिपहसालारों की सफ़ में ला कर खड़ा कर देती है। अपने मुख़ालेफ़ीन के मुक़ाबले में जिन हिक्मत जंग के उसूलों को सय्यदना ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनाया बल्कि यह कहना ज़्यादा मुनासिब होगा कि सय्यदना ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिन उसूलों को मुरत्तब किया वे अस्करी तारीख़ के दरख़शिदा बाब हैं।

सय्यदना ख़ालिद की हिम्मत तलब मन्सूबों को कामयाब बनाने के लिए मुस्लमानों की जंगी सलाहियत और उनकी फ़ौज की मुसलसल हरकत उनके सबसे अहम वसीले थे। इन दोनों चीज़ों से सय्यदना ख़ालिद ने क़ुव्वत-ए-बरदाशत की आख़िरी हद तक इस्तिफ़ादा किया और यह केवल इसलिए मुम्किन था कि उन्होंने अपने सथियों को कभी ऐसी मुश्किल में नहीं डाला जिसको उन्होंने ख़ुद न झेला हो। जहां ख़लीफ़ा अव्वल को तारीख़ इस्लाम में एक मुमताज़ तरीन मुक़ाम हासिल है वहां पर सय्यदना ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो भी उन नामवर सिपहसालारों में से सबसे पहले थे जो बैरूनी इलाक़ों को फ़तह करने और दुनिया के सयासी और मज़हबी नक़्शे को नई शक्ल देने में हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दस्त रास्त थे। जिस तरह हर मुस्लमान हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सयासी और रुहानी राहनुमाई में और सय्यदना ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो की अस्करी क़ियादत के ज़रीया इराक़ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक तुंद तूफ़ान की तरह छा गए अब वे इसी तरह एक दूसरी सलतनत पर धावा करने वाले थे और वे मशरिक़ी रूमा था।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अबू नसर अनुवादक, पृष्ठ 679 - 681)

बहरहाल यह कुछ थोड़ा सा हिस्सा हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने का है। बक़ाया इन शा अल्लाह आइन्दा पेश होगा। जैसा कि मैंने कहा था कुछ वक़्त ज़ायद लगेगा। ये जंगों का सिलसिला ख़त्म हुआ।

अगले जुमा इन शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया बर्तानिया का जलसा सालाना भी शुरू हो रहा है। दुआ करें अल्लाह तआला हर लिहाज़ से इस जलसा को बाबरकत फ़रमाए। शामिल होने वाले जो आ रहे हैं वे भी, उनका सफ़र भी ख़ैरीयत से हो। ख़ैरीयत से आएं शामिल होने के लिए। जो डयूटी देने वाले हैं उन के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनको अपने फ़रायज़ सही तरह अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। और क्योंकि दो साल बल्कि तीन साल के वक़फ़ा के बाद बड़ा जलसा हो रहा है, पिछले साल हुआ था लेकिन छोटे पैमाने पर, तो मुकम्मल तौर पर बड़ा जलसा अब हो रहा है इसलिए बाअज़ दिक़्क़तें भी होंगी।

अल्लाह तआला जो भी इंतिज़ामी दिक़्क़तें हैं या जो भी दिक़्क़तें किसी भी सूरत में पैदा हो सकती हैं उनको दूर फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष रहने वाले लोगों का बड़ा वर्ग अहमदी होगा क्या वह दिन हम देखने वाले हैं या हमारे बाद आने वाले देखने वाले हैं। वे दिन कब आएगा?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह तो अल्लाह तआला बेहतर जानता है मैं तो भविष्यवाणी नहीं कर सकता। परन्तु इन शा अल्लाह ज़रूर आएगा। अब तुम लोग दुआएं कितनी करते हो प्रयास कितने करते हो। अपनी हालतों को कितना अनुकरणी तौर पर बदलते हो। नेक उदाहरण कितना दिखाते हो। तो यदि सारे दुआएं करने लग जाओ तो वह दिन इंशा-अल्लाह आ जाऐंगे। जल्दी आ जाऐंगे परन्तु संसार में आसार तो शुरू हो गए हैं। प्रत्येक वर्ष लाखों बैअतें होती हैं इसी लिए होती हैं कि अल्लाह तआला थोड़े थोड़े पैमाने पर नज़्ज़ारे दिखा रहा है। अब यह तुम्हारी दुआ पर depend करता है। तुम्हारी दुआ से मुराद है सारी जमाअत दुआ करे।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया था कि एक आदमी आएगा जो अपने आपको बादशाह समझेगा और इसकी एक आँख रोशन होगी और दूसरी आँख अंधी होगी।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : ठीक है वह दज्जाल की हदीस है और बड़ी लंबी हदीस है। एक आँख से काना होगा एक आँख फूली हुई होगी। यह दज्जाल के बारे में है। दज्जाल जब आएगा अर्थात दज्जाल जो बड़ी ताक़तें हैं जो दीन को नहीं समझतीं उनके दीन की आँख जो दाएं आँख है वह अंधी है। और बाएं आँख जो संसार की है इसकी नज़र से वह देखते हैं इस को समझने के लिए सूरत कहफ़ पढ़ो। इस का अनुवाद लिखा हुआ है इस में थोड़े से फुट नोट भी लिखे हुए हैं वह पढ़ो तो तुम्हें समझ आजाएगी।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा ने प्रश्न किया कि क्या फक्फे नौ बच्चियां प्राइमरी स्कूल टीचर बन सकती हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हाँ बन सकती हैं परन्तु यहां पढ़ने के लिए प्रयास यह करो कि ऐसी जगहों पर जाके दाख़िला लो जहां तुम्हें स्कार्फ में पढ़ने की आज्ञा हो यदि नहीं आज्ञा मिलती और यदि तुम्हारा ज़बरदस्ती स्क़ाफ़ स्कूल कॉलेज में उतारते हैं तो उतार के पढ़ने के बाद फिर स्कूल के गेट से बाहर निकलते ही स्कार्फ तुम्हारे सिर पर होना चाहिए।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि हदीस में आता है कि जन्नत माओं के क़दमों तले है

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सारे लड़कों और लड़कियों ने एक ही तरह का प्रश्न इकट्ठा किया हुआ है? इस का उत्तर में लड़कों को दे चुका हूँ वहां से सुन लेना।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया कि बापों के क़दमों के नीचे जन्नत क्यों नहीं है?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किसी सहाबी ने पूछा कि किस का हक़ मुझ पर ज़्यादा है। अर्थ है कि माँ या बाप में से कौन ज़्यादा हक़ रखता है। आपने फ़रमाया तेरी माँ। उसने कहा फिर, आपने कहा तेरी माँ। उस ने कहा फिर, आपने कहा तेरी माँ। फिर चौथी दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तेरा बाप। क्योंकि माँ जो है वह बच्चे को पैदा भी करती है इसकी ख़ातिर दर्द भी उठाती है उसकी तकलीफ़ भी उठाती है उस की तर्बीयत भी करती है। बाप तो बाहर के कामों में लगा रहता है। घर में तो माँ होती है और माँ के साथ बच्चों का ज़्यादा सम्बन्ध रहता है। तर्बीयत का जितना समय है माँ के साथ गुज़रता है। इस लिए यदि माँ नेक तर्बीयत करलेगी तो पता चल जाए, बच्चा जन्नत में जाने वाला होगा यदि माँ नेक तर्बीयत नहीं करती तो फिर दोज़ख़ में भी अपने बदआमाल के कारण से चले जाते हैं।

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ ने प्रश्न किया जब घर में बस महिलाए और लड़कियां हों और बाजमाअत नमाज़ पढ़नी हो तो महिला पढ़ा सकती है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हाँ पढ़ा सकती है

प्रश्न : एक वाकिफ़ा नौ विद्यार्थी ने प्रश्न किया कि जो पैसे हम सदक़े के लिए जमा करते हैं क्या उनमें से हम एमरजैंसी प्रयोग के लिए निकाल सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यदि एमरजैंसी चाहिए हो तो निकाल लो परन्तु फिर उस को पूरा करो। किसी और से मांगने के बजाय तुम अल्लाह तआला से उसकी मद में से ले के मांग लो। प्रयास यह करो उसके बाद जितनी जल्दी हो फ़ौरी तौर पर पूरा करना है।

(शेष आगे...) ★ ★ ★

* .... हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देने वाली औरत के बारे में हुज़ूर ने अपने एक ख़ुतबा जुमा में फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ कर दिया था जबकि एक हदीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे क़तल करवा दिया था, इस बारे में मज़ीद राहनुमाई की दरख़ास्त है।

---

* .... जब हम अपनी मर्ज़ी से पैदा नहीं हुए तो ख़ुदा तआला के अहकामात की पैरवी हम पर क्यों लाज़िम है? तथा लिखा कि दुआए क़नूत में जो यह फ़िक़रा है कि "हम छोड़ते हैं तेरे नाफ़रमान को" तो क्या इस से मुराद नाफ़रमान औलाद और जमाअत के लगो भी हो सकते हैं?

---

*.... क्या किसी की मौत का अंजाम उसके मज़हबी अक़ायद पर मुनहसिर है?

---

* ... जलसा सालाना जर्मनी में एक तक़रीर में दज्जाल को एक शख़्स के बजाए इस्तिआरे के तौर पर पेश किया गया था लेकिन पिछले दिनों एक वीडीयो में सही मुस्लिम की एक हदीस का वर्णन था जिसमें दज्जाल को एक मुजस्सम इन्सान क़रार दिया गया है। क्या यह हदीस authentic है?

---

* ... आजकल के हालात की वजह से ग़ैर मुस्लिम, मुस्लमानों से डरते हैं। हम उन्हें कैसे तसल्ली दे सकते हैं?

---

* ... जब कोई मुस्लमान फ़ौत होता है तो हम इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ते हैं। अगर कोई ग़ैर मुस्लिम फ़ौत हो तो क्या हम उसके लिए भी यह पढ़ सकते हैं या नहीं?

* .... अल्लाह तआला जब हमारी तक़दीर लिख देता है तो फिर हम दुआ क्यों करते हैं, हमें दुआ की क्या ज़रूरत होती है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त-21)

सवाल एक मुरब्बी साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देने वाली औरत के बारे में हुज़ूर ने अपने एक ख़ुतबा जुमा में फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ कर दिया था जबकि एक हदीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे क़तल करवा दिया था, इस बारे में मज़ीद राहनुमाई की दरख़ास्त है। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 20 फ़रवरी 2020 ई. में इस बारे में मज़ीद वज़ाहत करते हुए फ़रमाया :

उत्तर इस मसला में उलमाए हदीस में भी इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। लेकिन ज़्यादा मुस्तनद और सिक़ा कुतुब अहादीस में वर्णन अहादीस के अनुसार यही मसलक दरुस्त है कि इस औरत के हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल की खुली खुली साज़िश करने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ फ़र्मा दिया था। और बावजूद इसके कि इस ज़हर की काट आख़िरी उम्र तक आपके गले में महसूस होती रही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ख़ातिर उस औरत को कोई सज़ा नहीं दी। जबकि दुनिया में ज़माना-ए-क़दीम में भी और आज के तरक़्क़ी याफताह ज़माने में भी किसी बादशाह या सरबराह हुकूमत के क़तल की केवल मंसूबा बंदी पर मौत की सज़ाएं दी जाती हैं।

कुछ मुहद्दिसीन ने इस मतभेद की वजह यह वर्णन की कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले इस औरत को कोई सज़ा नहीं दी थी लेकिन जब हज़रत बशर बिन बुरा रज़ियल्लाहु अन्हु की इस ज़हर आलूदा गोश्त के खाने से वफ़ात हो गई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़िसास के तौर पर उस औरत को क़तल करवा दिया। अगर यह तौजीही दरुस्त भी हो तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी का यह पहलू जो हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़ात के लिए कभी किसी से इंतेक़ाम नहीं लिया, इस वाक़िया में भी बहुत नुमायां तौर पर सामने आता है।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा है कि बच्चे अक्सर प्रश्न करते हैं कि जब हम अपनी मर्ज़ी से पैदा नहीं हुए तो ख़ुदा तआला के अहकामात की पैरवी हम पर क्यों लाज़िम है? तथा लिखा कि दुआए क़नूत में जो यह फ़िक़रा है कि "हम छोड़ते हैं तेरे नाफ़रमान को" तो क्या इस से मुराद नाफ़रमान औलाद और अफ़राद-ए- जमाअत भी हो सकते हैं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 04 फ़रवरी 2020 में इन सवालात का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर :अल्लाह तआला एक बच्चा को उसके वालदैन की ख़ाहिश के अनुसार पैदा करता है। फिर वालदैन को नसीहत करता है कि औलाद के नेक और सालेह होने के लिए दुआ करो और इस उद्देश के लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में दुआ भी सिखाई है।

अल्लाह तआला ने इन्सान को अशरफ़-उल-मख़लूक़ात क़रार देकर उसे सोचने के लिए ज़हन और ज़िंदगी गुज़ारने के लिए मुख़्तलिफ़ सलाहीयतों से नवाज़ा है। फिर उसे अच्छे और बुरे की पहचान करवा कर आज़ाद छोड़ दिया और उसे कहा कि अगर इस दुनिया की आरिज़ी ज़िंदगी में अच्छे काम करोगे तो आख़िरत की दाइमी ज़िंदगी में अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाले मुख़्तलिफ़ किस्म के इनामात के वारिस क़रार पाओगे लेकिन अगर बुरे काम करोगे तो शैतान के क़बज़े में चले जाओ जिस की वजह से एक तो अलग अलग किस्म के इन इनामात से वंचित रहोगे और दूसरा शैतान के नक़श-ए-क़दम पर चलने की वजह से जिन रुहानी बीमारियों का शिकार हो उनके ईलाज के लिए उखरवी ज़िंदगी की जहन्नुम में जो कि वहां का हस्पताल है तरह-तरह के तकलीफ़-दह इलाजों से गुज़ारना पड़ेगा। क़ुरआन-ए-करीम ने अल्लाह तआला और शैतान के जिस मुकालमा को हमारे लिए वर्णन किया है इस में भी यही मज़मून है कि जब शैतान ने अल्लाह तआला से कहा कि मैं इन्सानों को तेरी राह से बहकाऊँगा तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरे बंदे तेरी बात

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 08 September 2022 Issue No. 36

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

हरगिज़ नहीं मानेंगे और मैं अपने उन बंदों को जन्नत जैसे इनामात से नवाज़ोंगा और जो तेरी बात मानेंगे तो मैं उनसे जहन्नुम को भरूँगा।

अतः अब यह हर इन्सान का फ़र्ज़ है कि वे ख़ुद सोचे कि उसने अल्लाह तआला के अहकामात की पैरवी करके उस के इनामात का वारिस बनना है या शैतान की राह इख़्तेयार करके जहन्नुम की सज़ाओं का हक़दार बनना है।

जहां तक दुआए क़नूत के फ़िक़रा का ताल्लुक़ है तो इस से मुराद वह फ़ासिक़-ओ-फ़ाजिर कुफ़्फ़ार हैं जिन्हों ने मुनाफ़क़त और धोखे के साथ मुस्लमानों का क़तल-ओ-ग़ारत किया और उन्हें तरह तरह के नुक़्सान पहुंचाए। इसलिए बैर मऊना और रजीव जैसे वाक़ियात के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़नूत फ़रमाया। अतः माता पिता की नाफ़रमान औलाद या निज़ाम जमाअत से इंतेज़ामी सज़ा पाने वाले अफ़राद जमाअत इस से मुराद नहीं हो सकते।

जबकि इंतेज़ामी सज़ा पाने वाले ऐसे अफ़राद जमाअत जिन पर इन सज़ाओं का बज़ाहर कोई असर नहीं होता, उनकी झूठी अनाओं ने उन्हें अपने क़बज़े में लिया होता है और वे भूल जाते हैं कि निज़ाम जमाअत की इताअत करनी है। ऐसे लोगों को इस सज़ा का एहसास दिलाने के लिए बाक़ी अफ़राद जमाअत का फ़र्ज़ बनता है कि उनके साथ मजलिसों में न बैठें, उन्हें अपनी दावतों में न बुलाऐं और न उन्हें अपनी ख़ुशियों में शामिल करें। क्योंकि जमाअती ताज़ीर एक मुआशरती दबाओ के लिए दी जाती है। जबकि बीवी बच्चों और वालदैन को उनके साथ ताल्लुक़ात रखने की इसलिए इजाज़त दी जाती है कि वे उन्हें समझाएँ और निज़ाम जमाअत का

फ़रमांबर्दार और सेहतमंद फ़र्द बनाने की कोशिश करें।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से दरयाफ़त किया कि क्या किसी की मौत का अंजाम उसके मज़हबी अक़ायद पर मुनहसिर है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 04 फ़रवरी 2020 ई. मैं इस मसला के बारे में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला अम्बिया को इसलिए अवतरित करता है कि वे लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाऐं और लोग इस दुनिया की आरिज़ी ज़िंदगी अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार गुज़ार कर उखरवी ज़िंदगी के दायमी इनामात के वारिस बनें और शैतानी रास्तों को तर्क कर के उखरवी अज़ाब से बचें। इसलिए अल्लाह तआला और उस के नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है। क़ुरआन-ए-करीम ने इस मज़मून को मुख़्तलिफ़ जगहों पर वर्णन फ़रमाया है।

लेकिन किसी के जन्नत या दोज़ख़ में जाने के फ़ैसला का इख़्तेयार अल्लाह तआला के पास है। क्योंकि वह हर चीज़ का मालिक है। और वह फ़रमाता है कि मैं शिर्क के सिवा समस्त गुनाहों को माफ़ कर देता हूँ। अतः किसी आम इन्सान को इख़्तेयार नहीं कि वह दूसरों के जन्नत या दोज़ख़ में जाने का फ़तवा दे। जबकि ख़ुदा के नबी और फ़िरिस्तादे चूँकि ख़ुदा से ग़ैब का इलम पाते हैं इसलिए जब कोई नबी या फ़िरिस्तादा किसी के बारे में कोई बात कहता है तो वह बात दरअसल ख़ुदा तआला के ही इलम पर मबनी और ऐन सदाक़त होती है। इसलिए हदीस में आता है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने मरने वाले का ज़िक्र-ए-ख़ैर किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई। फिर एक दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने मरने वाले की बुराईयों का वर्णन किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसके लिए जहन्नुम वाजिब हो गई। और फिर फ़रमाया कि मोमिन लोग ज़मीन पर अल्लाह तआला के गवाह हैं।

फिर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला रहीम-ओ-करीम है। वह किसी की छोटी से छोटी नेकी का भी अज्र ज़रूर उसे देता है। इसलिए हदीस में आता है कि एक ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की कि मैंने कुफ़्र की हालत में महज़ ख़ुदा तआला के ख़ुश करने के लिए बहुत कुछ माल मसाकीन को दिया था। क्या उस का सवाब भी मुझे मिलेगा? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वही सदक़ात हैं जो तुझे इस्लाम की तरफ़ खींच लाए हैं।

अतः किसी की मौत पर उस के मज़हबी अक़ायद की बिना पर उसके लिए जन्नत या जहन्नुम का फ़ैसला करना किसी आम इन्सान के इख़्तेयार में नहीं है। यह काम ख़ुदा तआला का है या उसकी नियाबत में उस के नबियों और फ़िरिस्तादा का है।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि जलसा सालाना जर्मनी में एक तक़रीर में दज्जाल को एक शख़्स की बजाय इस्तिआरे के तौर पर पेश किया गया था लेकिन पिछले दिनों एक वीडीयो में सही मुस्लिम की एक हदीस का वर्णन था जिसमें दज्जाल को एक मुजस्सम इन्सान क़रार दिया गया है। क्या यह हदीस authentic है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 20 फ़रवरी 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : दरअसल आख़िरी ज़माने में इस्लाम ने जिन मसायब और फ़ित्नों से दो-चार होना था, उनमें दज्जाल और याजूज माजूज का खासतौर पर वर्णन मिलता है। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम में मुख़्तलिफ़ पैरायों में इन फ़ित्नों का वर्णन है और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में इन फ़ित्नों से अपनी उम्मत को आगाह फ़रमाया है, जिसका वर्णन कई अहादीस में वर्णन हुआ है। उन्ही में से एक हदीस सही मुस्लिम की भी है जिसका आपने वर्णन किया है। यह हदीस भी इस मज़मून से ताल्लुक़ रखने वाली दीगर अहादीस की तरह कशफ़ी नज़ारा और इसतिआरात पर मुश्तमिल है। अगर इस हदीस में वर्णन उमूर हक़ीक़त पर मबनी होते तो इस रावी के इलावा भी कई और लोगों ने इस हदीस में वर्णन उस जसासा और देव-हैकल दज्जाल को ज़ाहिरी आँखों से देखा होता। अतः किसी और का इस हदीस में वर्णन इन विषयों के बारे में अपना ज़ाहिरी मुशाहिदा वर्णन न करना साबित करता है कि यह एक कशफ़ी नज़ारा था।

बाक़ी जहां तक दज्जाल और याजूज माजूज की हक़ीक़त का ताल्लुक़ है तो यह एक ही फ़ित्ने के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिर हैं। दज्जाल इस फ़ित्ने के मज़हबी पहलू का नाम है। जिसका अर्थ है कि ये गिरोह आख़िरी ज़माने में लोगों के मज़हबी अक़ायद और मज़हबी ख़्यालात में फ़साद पैदा करेगा। और इस ज़माने में जो गिरोह सयासी हालात को ख़राब करेगा और सयासी अमन-ओ-अमान को तबाह-ओ-बर्बाद करेगा उसको याजूज माजूज का नाम दिया गया है। और हर दो से मुराद मग़रिबी ईसाई अक़्वाम की दुनयावी ताक़त और उनका मज़हबी पहलू है।

शेष आगे .....

★ ★ ★

اب دیکھئے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad